Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

Sundari charatar

6589. Price R:/4/=

सुन्दरीचरित्र

अर्थात् दुर्गा पाठ भाषा

अनन्य कवि कृत

जिसमें

SINGH MUSEUM 2768 SRINAGAR

सकल मनोरथ दायिनी भक्त जन रक्षा परायणी श्री जग दम्बिका दुर्गा जी के अभिलाष दायक चरित्र अनेक ललित भाषा छन्दों में वर्णित हैं॥

Acc no 6589
Call- 29516
10-04-13

स्थान लखनऊ

श्रीयुत मुन्शी नवलकिशोर जी के यन्त्रालय में शुद्धता पूर्वक छपा

माह अगस्त सन् १८७६ ई०

891.43
N235

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इस महीने अर्थात् अगस्त सन् १८७९ ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तैयार हैं वह इस सूची पत्र में लिखी हैं और उन का मोल भी बहुत किफायत से घटा कर लिखा है परन्तु व्योपारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिन को व्योपार की इच्छा हो वह छापे खाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम खत भेजकर क़ीमत का निर्णय कर लें॥

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
दुर्गा पाठ सटीक	अवध यात्रा	पद्मावती खण्ड आल खण्ड
अपरधभञ्जन स्तोत्र	ज्ञान चालीसी	भगवद्गीता
मार्कण्डेय पुराण	रस राज	मुहूर्त्त चिन्तामणि सारिणी
श्रीमद्भागवत सटीक १२स्कन्ध	सामुद्रिक	शब्दार्थ कोष
लघु कौमुदी	बारह मासी फ़क़ीर अलाबख्श	लावनी वो शेर बनारसी
शङ्कर दिग्विजय भाषा	मनुस्मृति उर्दू टीका सहित	अमर विनोद
वैराजीवन	इन्द्रजाल नागरी	पाराशरी सटीक
किताबुपदवारी चार भाग	कथा भङ्गन जी	युगल विलास
वैताल पच्चीसी नागरी	रमायण नागरी	ज्ञान माला
राम लीला नाग लीला	रमयण जिल्द बन्दी	भाषा महा भारत मुक्तावली
ब्रह्म सार	रमायण तुलसी कृत	रमल सार नागरी
परमार्थ सार	रमायण तुलसी कृत सटीक	दैवज्ञा भरण
प्रेम सागर	सत सई रमायण	जनक पच्चीसी
सूर सागर	कविता वली रमायण	सिंगार प्रकाश
रस प्रकाश	गीता वली रमायण	नानार्थ नौ संग्रह वली
भक्त माल	रमायण दोहा वली	संग्रह वली
सहिस्र स्तोत्र	कायस्थ कुल भास्कर	दूसरी पुस्तक रमयण माला
सभा विलास	क्रिस्नद् गोपी चन्द भरतरी	तीसरी रमयण गीत अष्टक
वैद्य मनोत्सव	शीघ्र बोध	चौथी ज्ञान दोहा वली
लीला वती नागरी	श्री गोपाल सहस्र नाम	पांचवीं रस सारिणी
अनन्त सागर	गणित काम धेनु	छठी तिथि बोध
गणित सागर बड़ी	बहार बिन्द्रा बन	सातवीं पुस्तक भाव रत्न कृत
विक्रम विलास	हनू मान बाहुक	भरतरी गीत

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

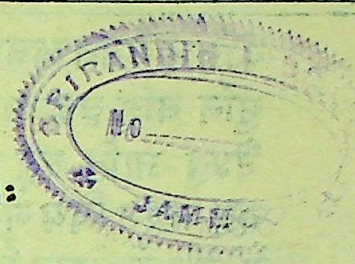

ॐ श्रीगणेशाय नमः

अथ सुन्दरीचरित्र अनन्य कवि कृत लिख्यते

राम दूत

॥ दोहा ॥ सुन्दर पद गुरु नाथ के सुन्दर गुरु उपदेश ॥
सुन्दर चरित भवानि के सुन्दर सुरथ नरेश ॥१

त्रिकल

॥ दोहा ॥ सुरथ धरम राजा भयो केवल धरम निधान ॥
सकल नगर कुल जन प्रजा पालहि पुत्र समान ॥२

वल

॥ दोहा ॥ नृपति भार मन्त्रिन दियो आपु करत सुख मोद ॥
कै नित नेम शिकार को कै रस वाम विनोद ॥ ३
तब शत्रनि व्यवहार लहि जान्यो नृपति अचेत ॥
देश मारि उघरो नगर सब परि वार समेत ॥ ४ ॥
राजा मन्त्रिन वल रहे मंत्रिन कियो विस्वास ॥
जाय मिले सब शत्रु लहि नृपति भागि वन वास ॥ ५
मन महं राउ बिसूर ही करि करि सब को शुद्धि ॥
अपने दुख तन खबरि नहिं परी मोह वस बुद्धि ॥ ६
तोलों देखो वृद्ध यक रोवत झूरत गात ॥ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कौहै तू रोवत कहा नृप पूछी यह बात ॥ ७ ॥
सुनि वहि वृद्ध जवाब दै मेरो नाम समाधि ॥
वैश्य जाति बहु धन कुटुम भयो बुढापै व्याधि ॥८
वृद्ध जानि त्रिय सुतनि मिलि दीन्हों मोहिनि कारि॥
मैं उन को रोवत फिरतु सकत न मोहिं विसारि॥ ९

राजो वाच

जिन तोको वहु दुख दियो दियो बुढापै काढि ॥
तिन को तू रोवत कहा मोह विषय मन वाढि ॥१०

वैश्य उवाच

उन मोको वहु दुख दियो मेरो मन उन माहिं ॥
मोह न छूटै राज सुन मन मेरो वस नाहिं ॥११॥
सुनि राजा तिहि संगलै गत मेधा ऋषि पास ॥
ऋषि पूछी तुम कौन हौ चकित फिरहु उदास॥१२

राजो वाच

हम राजा यह वैश्य है भृत्य नि दियो निकारि ॥
हम उन को रोवत फिरत सकत न मोह संभारि॥१३
मोह फांस यह है कहा को व्याप्यो मन माहिं ॥
यह कारन कहियो गुरू समझ परति कछु नाहि॥१४

ऋषि रुवाच

तोमर छंद

सुन राज राज प्रवीन । मन शक्ति के आधीन ॥
श्री आदि शक्ति भवानि। द्वै शक्ति तिन ते जानि॥१५
विद्या अविद्या नाम । तिन के दुपद परिनाम ॥
विद्या सो ज्ञान सरूप। मोहक अविद्या भूप ॥ १६॥
जग है अविद्या अन्ध। परि मोह पासिनि धन्ध ॥
धरि जन्म मिथ्या गात। नित जात खात कमात॥ १७॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जे भजत आदि भवानि। कारन करन पहिचानि॥
तिन करति विद्या युक्ति। मुनि सिद्धि जीवनि मुक्ति॥१८
॥दोहा॥ कारन बंधन मुक्ति को आदि भवानी जानि॥
सकल सिद्धि आनंद करन सब लायक जग रानि॥१९

राजो वाच

तोटक छन्द

सुनि राज करी विनती तबहि। मन गाथ सुनी समझी अबहि।
कहिये सुकृपा करि देवि सकै। कितते उपजी कित है अब कै॥२०

ऋषि रुवाच

मूल नित्यानंद सरूप सर्वमय जानिये
उपजति विन सति नाहि अनादि बखानियें॥
देवनि संकट परत प्रगट तब हो तिहै।
वह अविगत सुनु राज सनातन जोति है॥२१॥
दोहा॥ प्रलय समय जब सिन्धु में सोवत थे हरि आपु॥
व्यापक तिनकी देह में निद्रा रूप प्रतापु॥२२॥
सोवत हरि की नाभि ते भयो ब्रह्म अवतार॥
मधु कैटभ पुनि श्रवनि ते भये असुर विकरार॥२३॥
तब संकेतहि देखि विधि हरि सोवत जल मांहि॥
क्यों यह जागै जक्त पति और सहायक नांहि॥२४॥
यहि विचार मन ध्यान धरि ज्ञान निरन्तर लेषि॥
अस्तुति करि जग मात की प्रेरक शक्ति विशेषि॥२५
तबै कृपा करि ईश्वरी शक्ति लई वह खैंचि॥
जावस हरि सोवत हते मन वच वुधि वल सौंचि॥२६॥
तब हरि सों उन खलन सों युद्ध भयो वर जोर॥
पंच सहस्र वर्षै भई घटै नहीं वल घोर॥२७॥
तब असुरन कहं ईश्वरी प्रेरक किय तिहि ठौर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तिन ही के मुख वाक छल कही और की और ॥२८॥
अब हरि तुम मारो हमैं धरि जंघन पर शीश ॥
सुनत सुरत धरि चक्र सों सिर काटो जग दीश ॥२९॥
इहि विधि विधि विस्नादि कह संकट देवि सहाय ॥
अब सुनि नृप इन्द्रादि हित जो प्रगटी जग माहिं ॥३०

इति श्री मार्कण्डेय पुराणे सावर्णि के मन्वन्तरे देवी माहात्म्ये मधु कैटभ वधःप्रथमो ऽध्याय ॥ १ ॥

दण्डक छन्द

वाढ्यौ महिषा सुर प्रचंड वलि वंड महा जाकी धाक सुनि कै विधाता धक पक्यो है ॥ ढाहत गढ़ कोट न गिरा वत गिरि शृंगन सों खुदतु खुरनि धरा शेष सक पक्यो है ॥ सातो दीप दपट समुद्र दहि चाल कर सूर शशि तारे न को पलक परो क्यौ है ॥ अक्षर अनन्य जाहि आवत सुनत कान देवन समेत भागि इन्द्र अक पक्यौ है ॥ ३१ ॥

सोरठा ॥ भागत इन्द्र तत काल गये त्रि देवन के निकट ॥
कह्यौ तहां सब हाल छोभ भयो उन के हिये ॥३२॥

दोहा ॥ तब सब देवनि अङ्ग ते कढी शक्ति हह राय ॥
तेज पुंज प्रज्वलित अति रही अग्नि क्षिति छाय ॥३३॥

मोती दाम छन्द

तवै सब देवनि स्तुति कीनि। दया करि देवि हमै लखि दीनि ॥
सह्यौ न परै तुव तेज अनन्त। कृपा करि दीजै मूरति वन्त ॥३४॥
पती सुनि कै तजि तेज प्रजोर। भई मृदु मूरति वैस किशोर ॥
धरे भुज आठ त्रिलोचन चारु। करै अरचा स्वर प्रेम अपारु ॥३५॥
मुरारि दियो कर चक्र विचित्र। विरंच कमण्डल दीन पवित्र ॥
त्रिशूल दियो शिव शंकर आपु। सुरेश दियो निज वज्र प्रतापु ॥३६॥
दई शक्ती कर मैं जल पाल। सुचर्म दियो निज काल कराल ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दई जम पास विना सन शत्र। दियो वदवा धन धान सो अत्र ॥३७
दियो मणि भूषण सिंधु सुहार। कियो कमला रति सर्व सिंगार ॥
हिमाचल वाहन सिंह सुदीन। भई तिहि पर अंस दार अवीन ॥३८
भुक्यो उतते महिषासुर आया। वेद रतु देवन संग रचाय ॥
तबै सब देवनि आपु पछानि। भुको अरि गंजन मात अकेलि ॥ ३९॥
केते दलवान न दीन उडाय। केते दल वज्रनि गंजि ढहाय ॥
केते दल शूलनि हूलनि मारि। केते दल चक्रनि खंड संघारि ॥ ४०
केते दल खड्गनि पत्रनि खंडि। केते दल सैथिन मारि विहंडि ॥
हन्यो सिगरे दल संगर खेलि। रह्यो महिषासुर आपु अकेलि ॥ ४१॥
इति श्री मार्कण्डेय पुराणे सावर्णि के मन्वन्तरे देवी मा
हात्म्ये महिषा सुर सैन्य वधः २ द्वितियोऽध्यायः ॥

दण्डक छन्द

कबहूं महिखहै के संगनि चलावै गिरि कबहूं दृष भुहै कैडफ
ने करतु है ॥ कबहूं गयन्द हैके घोर गल गाजतु है कबहूं कसिंह हैं
कै सिंह सो लडतु है ॥ कबहूं बिलाव हैकै लूक भूकत फिरै अंसर
अनन्य भेष केतक धरतु है ॥ जोई पास करै देवि सोई पलटतु रूप क्यों
हू महिषासुर न पकरि में परतु है ॥ ४२ ॥

दोहा॥ तब अम्बा अति कोप करि उतरि सिंह ते आप ॥
दियो पांव अरि पीठ पर क्यों सहि सकै प्रताप ॥ ४३॥
पीठ दाबि कै चरण तर छाती हन्यो त्रिशूल ॥
महिषा सुर मार्यो प्रबल सब असुरन को मूल ॥ ४४॥

सवैया॥ मारि महा महिषासुर को गरजी रन में रन गंजन रानी ॥
विष्णु विरंचि महेश सुरेश करी बहु अस्तुति वेद प्रमानी ॥
दै सब को वर दान अनेक भई तब आपुनु अंतर ध्यानी ॥
फूलि सबै सुर राज करै सुभुजै भय भंजनि नाम भवानी ॥ ४५॥
इति श्री मार्कण्डेय पुराणे सावर्णि के मन्वन्तरे देवी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

माहात्मे महिषासुर बध स्तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

सक्रादि स्तुति

दोहा॥ इहि विधि सों श्री भगवती हन्यो महिष धरि देहु ॥
अब सुनि शुभ निशुंभ प्रति कथा नृपति सुनि लेहु ॥ ४६

पद्धरी छन्द

वड्ढे नृप शुंभनि शुंभ राइ। दिति तुति अदित सुत शत्रु भाइ॥
नृप शुंभ छत्र पति वंधु जेठ। तिनते निशुंभ लघु वंधु हेठ॥ ४७॥
दुव वंधु परम समरथ सुसील। सुमेर सपान प्रलम्ब डील ॥
अति मायावी वल सिद्ध क्रुद्ध। दस दस हजार भुज परत युद्ध॥ ४८
तिन युद्ध जुरन समरथ्य कौन। थर थर कम्पत जल अग्नि पौन॥
धर धच कै तौ पत्ताल जाहि। स्वासनि देहै पर्वत उड़ाहि॥ ४९॥
अस प्रचंड जुग राज गर्व। सुर असुर चर्न सेवत स सर्व ॥
तिन अग्र भाग रक्तारि विंद। गज कोटि प्रवल दल तार मिंद॥ ५०
दल पति ह धूम्र लोचन कराल। जिहि देखि कंपै कलिकाल काल
पुनि चंड मुंड जोधा प्रचंड। विक्राल रूप दल वल अखंड॥ ५१॥
दल असुर जूह सम्मूह छाइ। राजत समस्त जनु काल राइ ॥
इमि शुम्भनि शुम्भ नरेश वड्ढ। सन सुख्य रहै नहि शत्रु ठड्ढ॥ ५२॥
वहु वार दिल्लु हारे ते युद्ध। यस तिलक लीन नृप शुद्ध शुद्ध ॥
विधि को सौंह लीन्ह्यौ है छड़ाइ। दिग पाल वंदि कीन्यौ रिसाइ॥ ५३
भंडारि लूटि लीन्ह्यौ कुवेर। स्थान छीन लीन्ह्यौ सुमेर ॥
लिय सावकरन सव वारु जित्त। सागरहि काढि लिय रतन चित्त॥ ५४
अपने करि सूरज चंद्र थाप। थपे लोक लोक दानौ प्रताप ॥
जम काल मृत्यु कुल वंदि कीन। थपे आपु शेष शिर भारु दीन॥ ५५
कुल सहित इंद्र दीन्यो निकारि। लिय ऐरावत है और रि॥
किय इंद्र लोक रज धानि राज। सुरवनि ह कंटक दानौ समाज॥ ५६

महान राज छन्द

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

समाज दैत्य राज नित्य राज संचि राज ही समस्त
देव राज सेव राज सेवत छवै। त्रिलोक सप्त द्वीप खंड
नौ अखंड मंड के ब्रह्मंड एक विश्व को महाय आनन
छवै॥ भने अनन्य अन्य राव चाव देखिये नहीं विशोष
छत्र छत्र पति नाथ शुंभ च छवै। विरंचि विष्णु जित्य
कित्य वोधि के प्रसाद भो प्रमाद सर्व शुंभ ही निशुंभ
शुंभ च छवै॥ ५७॥

चंचल छन्द

छवै निशुंभ शुंभ सभ्रवी महा प्रसाद॥
आनियो समस्त देव लोक लोक भो विषाद॥
लोक के विरंचि विष्णु सोचि के कियो विचार।
सर्व ये आधार आदि शक्ति सो करो पुकार॥ ५८॥

कुंडलिया

यहि विधि विधि विष्णारि सुर करि मम नुरत सिधारि। हेमा च-
ल गिरि पर गये निज स्थान निहारि॥ निज स्थान निहारि मात
आपुन जहं राज हि। महा पार वती नाम हेम परवत छवि छाज
हि॥ लहि ठिकान सुर सकल विकल वरनइ गति कि हि विधि।
करि प्रनाम जुरि पानि विने करुना कृति इहि विधि॥ ५९॥

छन्द जोती दाम दंडक॥

देव उवाच

जाति रूप जोति रूप सत्त रूप सिद्धि रूप गुण रूप
ज्ञान रूप सोभा रूप सोही है। इच्छा रूप क्रिया रूप
दया रूप माया रूप त्रिया रूप बल रूप वानी रूप
मोही है॥ आसा रूप प्यासा रूप निद्रा रूप छुधा रूप
चित्त रूप वुद्धि रूप चेतनता जोही है॥ नाना रूप
व्यापक प्रकाश सब शक्ति रूप जग में आधार जग मात

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

एकतोही है ॥ ६०॥

छप्पै॥

तुहीं जक्त आधार शक्ति माता भैभंजन। निराधार सुर सकल विकल तुव शरण निरंजन ॥ दीन्ह्यौ अरिन निकारि हारि कोइ वातन वुज्झहि। तुव आसा लिय आय विपिनि कोइ ठौरन सुज्झहि ॥ तुव अव तव जव आसा तुही आदि मध्य अन्त हि भननि। आवत लच्छ निरच्छ ही सुरक्ष रक्ष समरथ जननि ॥ ६१॥

छन्द

समरथजननि भय भंजनि विरद तेरो महा भय भीत हमै भयते निवारि ले। गरीवनि वाजिनी गरीव सी विदित वानौ जानि कै गरीवान निवाजसी विचारि ले ॥ अक्षर अनन्य भनै करुना निधान वानि करुना सुजानि दीन देवतानि तारिले ॥ मारत निशुंभ शुंभ संगर संघारत है आरत निहारि देवि अव्वकै उवारिले॥ ६२॥

सवैया

ज्यौं मधु कैटभ को वध कै विधि राखिलियो अपने कर कंजनि॥
ज्यौं महिषासुर को हति कै सुर पालि सबै सुख दै दुख गंजनि॥
त्यौं वो पुकारत आरत है हमै मारत शुंभनि शुंभनि रंजनि ।
दीन विचारि दया करि कै अव रक्षहमैं सरनै भय भंजनि॥ ६३॥

दोहा॥ इमि देवनि स्तुति करी दानव डरनि विहाल ॥
तौलौं निकसी पार्व्वती मंजन को तिहि काल॥ ६४॥
देखि सुरन श्री पार्व्वती वचन कहै मुख एव ॥
किहि की स्तुति करत हौ कित आये सब देव॥ ६५॥
यती कहत श्री गोर मुखि निकसी शक्ति अनूप ॥
तानिकसत श्री गौरि को ह्वै गयो श्याम सरूप॥ ६६॥
देखि गौरि ठाढ़ी भई अजव अम्बिका शक्ति ॥
ज्वाव दियो उन गौरि कहं जानि सुरन की भक्ति॥ ६७॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ईश्वरी उवाच

सोरठा॥ असुरन डर करि रौर मेरी अस्तुति करत सुर ॥
तिहि कारन सुनि गौर स्वयं सिद्धि प्रगटी सो मम॥६८॥

छप्पै ॥

स्वयं सिद्ध औतार स्वयं सोभा तन सोभन। स्वयं जोति आकार स्वयं विद्या गुण थोभन॥ स्वयं शास्त्र संयुक्त स्वयं ऐश्वर्य्य प्रवर्तन। स्वयं सैन सम्पन्न स्वयं कृत कर्म निवर्तन॥ चढ़ि स्वयं सिद्धि निजु सिंह पर ब्रह्मादिक संकट हरन। ह्वै प्रगट अम्बिका रूप इमि स्वय सिद्धि समरथ जनन॥ ६९॥

सोरठा॥ समरथ जननि अधार श्री भवानि भय भंजनी ॥
करन असुर संहार प्रगट अम्बिका रूप हुत॥७०॥

छन्द त्रिकूटगति

ह्वै प्रगट अम्बिका रूप उदित त्रिविधि सिंह विवान
सुदित अस्त्र शस्त्र प्रभाव मुदित अभि भूत अद्भुत काइ॥
निज प्रेम जोति प्रभाव पूरित सच्चिदानंद मूल मूरित
कोटि चंद सुछंद सूरित सुप्रकाश प्रभाइ ॥
इमि श्री भवानि स्वरूप दर शत अमर मुनि जनि प्रेम सरसत
नैन नीर प्रवाह वरसत सरसत उर अनु रागि ॥
किय प्रनव कोटै वृंग काय निकरत स्तुति विविधि भाय
निकृपनि जिमि धन कोपाय निति मिहि पायन लागि॥७१॥

मृदुल छन्द

पायन लागि रहे यहि विधि सुर विधिवत पूजि पूजि मन कामना।
श्री जननि घर स्तुति न की सुर सब भक्ति भक्ति मन भावना ॥
कीन सुभय भीत जानि भय नृ भय रहु मम राज राज वत वालिका।
तुम हित को पांउ मंडि मंडि रन खंडि असुर समस्त सुर सालिका॥७२

छन्द

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इमि जननि वचन वखानियो। सुन सुरनि जीवन जानियो ॥
करि प्रनव परम प्रमो दयो । सो नृ भय भय सब को दियो॥७३॥
सोरठा॥ तव समरथ जग माय । अंवर छिपायो कंदरा ॥
आपुनु समर उपाय। रतन शिखरि राजीजननि॥७४॥
दोहा॥ रतन शिखर राजीजननि धरि अति अद्भुत रूप ॥
नीव दई संग्राम की जासु नि मोहे भूप ॥ ७५॥

हंस छन्द

तहां आय कहुं असुर समूह। ढूंढ़त सुरन करन रन कूह ॥
रतन शिखर दरसी जग माय। जगमग जोति ज्वलित छवि छाय॥७६

गीतिका छन्द

दिव्य सिंहासन विराजति दिव्य मूरति वालिका॥
दिव्य भूषण वसन सुंदर दिव्य जोतित्रिपालिका ॥
दिव्य मानिक मुकट जगमग दिव्य मणिता टंक हैं।
दिव्य नैन विसाल झलमल दिव्य भृकुटी वंक हैं॥७७॥
दिव्य लाल ललाट सो है दिव्य मुकता नासिका ॥
दिव्य हार सोढार हिरदै दिव्य जोति प्रकासिका ॥
दिव्य अंगद वाहु मंडित दिव्य कंकन कर लसै ॥
दिव्य सुंदर अत्र मुकता दिव्य किंकिनि कटि लसै॥७८
दिव्य पैजनि पांय घुंघुरू दिव्य नूपुर अति बनै ॥
दिव्य रूप सिंगार नख शिख दिव्य भूषण है घनै॥
दिव्य पुहुपनि पानि किंदुक लीलही उर छारही ॥
इमि लसत दिव्य सरूप देवी दृष्टि कौन पसारही॥७९

इति श्री मार्कण्डेय पुराणे सावर्णि के मन्वन्तरे देवी माहात्म्ये सक्रादि स्तुति समाप्ता ४ चतुर्थोऽध्यायः॥

देवी का और दूत का वाक्य

दोधक छंद

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अद्भुत जोति प्रतापी। वात कछू न सकै कहि पापी॥
चकृत ह्वै मुरके सब साता। जाय कही नृप सों यह बाता॥८०

मोदक छन्द

सुनहु नृपति हम हिम गिरि गाता। एक अमर कन्यहि रज ताता॥
ज्वलित जोति अति करति हि तापा। लेहु बुलाय जगत पति आपा॥८१
दोहा॥ सुनत राय सुख पाय कै दूत भेज तत काल ॥
गयो पति त साजति जहां जगत जननि तन वाल॥८२

मुरिल छन्द

जगत जननि तन बाल रतन गिरि राज ही॥
कोटि चंद सों छंद परम छवि छाज ही ॥
देखि दूत चित चकित हिये डरि आपतें ॥
परि हां करि पर नाम जुरि पायनि वानतें॥८३॥

ईश्वरी उवाच

अरिल्ल छन्द॥

लहि प्रनाम चितई जग वंदनि। त्राहि त्राहि भाषहि सुर चंदनि॥
बूझि प्रश्न कसि तू भ्रम भुल्ल्यौ। सुनत दूत कर जोरति वुल्ल्यौ॥८४॥

दूत उवाच

चतुष्पदी छंद

सुनिये सुर नंदिनि त्रिभुवन चंदिनि हों नृप शुंभ पठायो ॥
सुनि तुव गुण रूप हि सुन स अनूपहि भूपति महि मन लायो॥
चलि उठि आपुन तजि हठु तापुन तप सों को फल लीजै ॥
सेवै शिव पाइनि हौठ कुराइनि राजित्रि पुर को कीजै ॥८५॥

देवी उवाच

धतानंद छंद

सुनि दूत वचन इति रन उदिम चिते जगत जननि वुल्लि पवयन।
[illegible] निमम औरन मोसम चलहु आजु जाके अयन॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मोगरव बाढ्यौ अति पर कोपति को कोपि छार त्रिभुवन करहु।
मोहि जीत सकै रन हेर सकै तन मद मरदै मम तोहि वरहु ॥ ८६॥

तोटक छंद

सुन दूत महा मन रोष बढ्यौ भनि दिव्य कहा मधु तोहि चढ्यौ
नृप शुंभ निशुंभ अभूत वली। सब देवन की जिनि सैन दली॥८७॥
तिहि के डर भागि दुरो हरि है। तिहि सों किमितैं अवला लरि है ॥
चलि मानि कहौ सुख राज करौ। कित पावक पुंज पतंग जरौ॥८८॥

देवी उवाच

मोटक छन्द

सुनत जननि भनि गज तु किन्तु सठ। मम तपसिनि किमि तजहु आपु हठ॥ समर स्वयंवर हमरे ये कह। करन समर नृप अग्र जाय कह ॥ ८९॥

दोहा॥ सुनत दूत आतुर गयौ कह्यौ नृपति सों जाय ॥
युद्ध स्वयम्वर उहि रच्यौ चलहु सुसजि द्विज राय॥९०॥

पद्धरी छन्द

सुनि राय तुरत धुम्राक्ष बोल। दिय पानहु कुमसो यहै खोल ॥
मारियो समर्थ जो करि सहाउ। गहि के शकि सोरी पकरि ल्याउ॥९१

सरस्वती छन्द

सुनि धूम्र लोचन सूरलै नृप नाथ को सिर नायकै ॥
सहस दैयत संग साज कै पहुंच्यो हिमां चल जायकै॥
सैना सुरत ठाढी हि कै चढि रतन शिखर आप ही ॥
दरसी तहां जग जननि कन्या रूप प्रेम प्रताप ही॥९२॥

सोरठा॥ परम प्रताप अपार श्री भवानि भय भंजनी ॥
देखि असुर तिहि वार रह्यो चकित चक वायकै॥९३॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आभीर छंद

देख जननि भनि वैन। कौतू चित वत नैन ॥
सुनि ही कै दलपाल। बोल्यो बोल कराल ॥ ९४ ॥

धूम्र लोचन उवाच

दोहा ॥ तूजो कही नृप दूत सो युद्ध स्वयं वर चाउ ॥
हौं गहि केशहि लये चलतु केहि की करत सहाउ ॥ ९५ ॥

लघुनराच छन्द

यती सुनत संकरी। कछुक स्वस हंकरी ॥
जम्यौ सो दुष्ट दारभो। छिनक माझ छारभो ॥ ९६ ॥

नराच छन्द

जरंत धूम्र लोचने समस्त सैन धाद्रये। महा कराल काल से अराल क्रुद्ध छाइयो ॥ अनंत अस्त्र शस्त्र छाडि मंडि युद्ध रिंध को। सो देखि मात हं कि कै हुंकार दीन सिंह को ॥ ९७ ॥

महानराच छन्द

हुंकार पाइ सिंह पिंगु हिंगला जमात को। नृसिंह ने प्रसिंह जोर घोर गर्व की लही। पस्यो कराल काल से विमाल पुञ्ज कढ्ढि कै तव ढ्ढि कै प्रकोप ओप बढ्ढियो दुसील ही ॥ भनै अनन्य चाव धन्य भिन्न भिन्न सैन की त्रिनैन की प्रभा जथा तथा प्रभाव डाल ही। विदारि ठौर ठौर कौर कौर कीन्ह भक्ष ही समस्त रक्ष जक्ष भक्ष लीलि लीन लील ही ॥ ९८ ॥

मनोरमा छन्द

लीलि लीलि लील हिय सैन सब नैन स्त अति अयन प्रयंजनु।
मर्दि मर्दि करि गर्द मर्दि रिपु कीन मर्द तंन ओन सु मंजनु ॥
निरखि हर्षि सुर वर्खि पहुंप झरि झरि करिव युध योधा रन रंजनु।
झारि भूमि मद धूमि रंन गंजि गज नि मजि गंज सोइ गंजनु ॥ ९९ ॥

रोला छन्द

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रबल केशरी सिंह सत्र मारि गिरि जाइ सो ॥
असुर भागुल नि देारि रोरि कीनिय नृप राय सो॥१००
सुनत नृपति अति कोप चंड मुंड दियो आयसु ॥
ल्यावहु अबलहि प्रबल मारि सिंह हिधिरिपायसु॥१०१॥

इति श्री मार्कण्डेय पुराणे सावर्णि के मन्वन्तरे देवी महात्म्ये धूम्र लोचन वधः देवी षष्ठो ऽध्यायः॥

छप्पै

राज कुकुम दल साजि गाजि धाये गण देवत ।
करत सार वर जोर घोर गर्जत मद भेयत ॥
अति कराल विकराल लाल बक्र निबल गर्वत।
लीन हरनि धुनु सरनि करनि केरत तरु पर्वत ॥
आकूत अनंत अनन्य भनि निरखि अमर सेनाडरिय॥
दूमि चंड मुंड अवलोकि रन सुलोक लोक खल भल परिय॥१०२

तोमर छन्द॥

लोक लोक खल भल परिय। दूमि चंड मुंड सैना चलिय ॥
हंकि हंकि वंकट विकट। आनि गर्जि गिरि वर निकट ॥ १०३॥

तोमर छन्द॥

तव जन निदान बनि देखिय। इति सिंह अकेलि विशेखिय ॥
तहां कोपि भृकुटी चढ़ाय। बलि कालिका उपजाय ॥ १०४ ॥
उपजीति कालि कराल । श्री जननि रोश रिसाल ॥ ॥
तन श्यामता सुसरबीनि। घन सघन केशव खीनि ॥१०५॥
भृकुटि कुटिल जोट वार। अति झल फल के ललार ॥
गिरि कंदरा सुर नाभ । अति पवन सुद्ध प्रभाभ ॥ १०६॥
बा रेति बदन अनन्त । सिवि रहि सुदन्त लसन्त ॥ ॥
रसना अरुन अति घोर। दृग अग्नि कुंड प्रजोर ॥ १०७॥
ठाढ़ीति रोम प्रवीर । हैमवति समुद गंभीर ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IGNCA-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रज्वलित पर्म प्रचंड। आनन सो भुज वर दंड ॥ १०८ ॥
करि पासि असि धनु वान। पग धरनि सिर असमान ॥
अति विकट भ्यानुक गात। गज चर्म श्रोन चु चात ॥ १०९ ॥
उर रुंड मुंडन माल। उर गगन है फत ठाल ॥ ॥
वल प्रवल प्रस्व सवार। किय जननि चर्ण ज्वहार ॥ ११० ॥

महान राच छन्द

जुहार जक्त मात को सुमात कालिका कही।
बढी धकोप ओप सत्र लोभ चित्त भाइगे।
खई तिचू अकास लो बकास दीसि प्रेन ही।
प्रकास तेज पुञ्ज रोम रोम रोष छाइगे ॥
भनै अनन्य भेष भिन्न छोभ वक्र को कहै
त्रिलोक है अकूत भूत प्रेत ताप ताइगे।
सो देखि दान वान केन जानि प्रान किं गये ॥
गजंत सिंह ज्योस सेस शेव ही ससाइगे ॥ १११ ॥
ससाइगे दयत्त सर्व देखि कालि चंडिकै प्रचंड।
चंड मुंड चंड त्रान लीन त्रास ही। ।
कुठार खड्ग तो मरो त्रिशूल चक्र साइकै ॥
ससाय कै समस्त अस्त्र शस्त्र वर्ष भाल ही ॥
भनै अनन्य यों अनंत अत्रकं जि ते चले।
किते कली लि लीन देवि वक्र में विलास ही ॥
समस्त रक्ष जक्ष पक्ष हत्थ पैलु ढाय कै ॥
उडंत दम्बि सनि एक स्वास की उसासही ॥ ११२ ॥
उसा सही उडंत आस पास दीह दैयता।
प्रमै यताह संत अट्ट हास ग्रास चाहिनी ॥
गजंति कोटि गंजसी सुवाजसील वानि ज्यों।
भवा निदान वानि की अमान सैन दाहिनी ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भनै अनन्य भिन्न कर्म भैर वीति सैर वी सो खलिकै
खिलंति दन्ति पन्ति स्वर्ग खाहिनी ॥ ॥
प्रचंड चंड मुंड के सुहंड गुथ्थि कै सही ।
अखंड सोन सिंह को पियन्ति प्रेत वाहिनी॥२१३
पियन्ति श्रोन सिंह सैन सर्व को प्रहारिकै ।
अहार कै डकार संच कार सत्र सालिका ॥
विदारि चंड मुंड रुंड मुंड गुंथि मालिका ॥
विसाल माल डारि चर्म ओढि रक्ति लालिका॥
भनै अनन्य जैति चित्ति जित्ति जुद्ध ज्वालिका ।
प्रभूमि कै प्रमत्तरंग भूमि चंडि चालिका ॥
अट्टहास रास आस पास रूप ज्वालिका ॥
सो अग्र जक्त मात के न चंति मात कालिका॥२१४
दोहा॥ कोटि काल वल कालिका गंजै असुर कराल ॥
भागि भगोलनि रौरि किय सभा शुंभ भूपाल॥२१५
इति श्री मार्कण्डेय पुराणे सावर्णि के मन्वन्तरे देवी माहात्म्ये चण्ड मुण्ड वध ७ सप्तमोऽध्यायः॥

पद्धरी छन्द ॥

सुनि रौरिणेश पर जरित रिन्द। दिय पान वोल वल रक्त विन्द॥
तव रक्त विन्द लै पान गज्जि। तत काल चल्यो वहु सैन सज्जि॥२१६
पच्चास कोटि सावथ प्रचंड। लक्षनि रक्षस दैयत अखण्ड ॥
अर्वनि गयन्द खर्वनि तुरवार। पद्मनि पै दल लागे पुकार॥२१७॥
इमि रक्त विन्द दल साजि धाव। हुंकरत दैत्य अति युद्ध चाव ॥
धरि धचकि लचकि अकुलान शस। अति कंपु भयो वसुधा कलेस॥२१८
तिन देखि जक्त माता विचार। काली अकेलि किमि सकहि मार ॥
इमि चिंति मात चित मुद्रि नैन। प्रगटी तुरन्त मुख शक्ति सैन॥२१९॥
निज ब्रह्म शक्ति कढि हंस नृष्टि। धरि ब्रह्म रूप जिन रची सृष्टि ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पुनि विष्नु शक्ति कढि गरुड़ रथ्थ। है विष्नु विश्व पालहि समथ्थ॥१२०
पुनि रुद्र शक्ति कढि चढे नन्द। है रुद्र प्रलय त्रिभुवन निकन्द॥
पुनि इन्द्र शक्ति कढि चढ़ि गजिंद्र। जिनि वर त्रहत्यो धरि रूप इंद्र॥१२१
कौमारि शक्ति कढि चढ़ि मयोर। कौमार रूप सुर वन्दि छोर॥
वाराह शक्ति कढि महिष चढ़ु। वाराह रूप धरि धरनि डहु॥१२२॥
नर सिंह शक्ति कढ़ि अति प्रचंड। नर सिंह रूप जिन असुर खंड॥
पुनि कढ़ी भद्र काली कराल। सम काल शक्ति काली अराल॥१२३॥
पुनि शिव दूती कढ़ि कालदंड। चढ़ि काल शक्ति प्रगटी प्रचंड॥
पुनि पवन शक्ति प्रगटी प्रजोर। अरु अग्नि शक्ति उपजीति घोर॥१२४॥
पुनि वरुण शक्ति प्रगटी गंभीर। कौवेरि शक्ति गिरि मेरु धीर॥
इत्यादि देव शक्ति जे सर्व। जग मात स्वास प्रगटी ति सर्व॥१२५॥

कुण्डलिया छन्द

प्रकटी इमि जग मात मुख देव शक्ति सब आनि॥
सब देवन की देह मह ये वर दायक जानि॥
ये वर दायक जानि करन चित निकृत कायक।
इन विन वे लघु मान इन हि भजि वे सब लायक॥
इन लगु उन वल तेज इन कबहूं वल नहि घटी।
महा प्रलय सब शक्ति जगत माता मुख प्रगटी॥१२६॥
सोरठा॥ प्रगटे शक्ति इमि सर्व किय प्रनाम जग जननि कहं॥
जननि जानि रिपु गर्व रन गंजनि आयुस दियो॥१२७॥

सवैया॥

लहि आयसु धाय रिसाद सुरी गलि गर्जि परी भक रुण्डनि में॥
जित ही जित दैयत आनि अरै तित ही तित मारहि मुंडनि में॥
भ न अहार व्योम महा रिपु छैरति पैरति ओनित कुण्डनि मैं॥
वल केहरी ज्यों दल केलि करै अरि कुञ्जनि पुञ्ज प्रतिभु एडनि में॥१२८

नराच छन्द

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सुझण्ड शत्रु सैन मैं सु शक्ति सर्व गर्ज ही ।
जहां तहां निहार कै सम्हार मारु वर्ज ही ॥
कहूंक ब्रह्म शक्ति ब्रह्म शस्त्र शत्रु खंड ही ।
कहूंक विष्णु शक्ति विष्णु शत्रु मारु मंड ही ॥ १२९ ॥
कहूंक रुद्र शक्ति रुद्र शस्त्र शत्रु चूर ही ॥
कहूंक इन्द्र शक्ति इन्द्र शस्त्र दैत्य पूर ही ॥
कहूं वराह शक्ति वार शस्त्र मोर मंज ही ।
कहूं नृसिंह शक्ति सिंह शस्त्र शत्रु गंज ही ॥ १३० ॥
कहूं कुमारि शक्ति मारु सस्त्र सौ विदार ही ।
कहूंक अग्नि शक्ति अग्नि शस्त्र फौज जा रही ॥
कहूंक पौन शक्ति पौन शक्ति सोंउ ड़ावही ॥
कहूंक नीर शक्ति नीर शक्ति सों वुड़ा वही ॥ १३१ ॥
कहूंक काल शक्ति काल शस्त्र शत्रु छै करै ।
कहूंक कृष्ण शक्ति कृष्ण शस्त्र युद्ध जै करै ॥
अनंत देव शक्ति अस्त्र शस्त्र यों तनं धरी ।
प्रमस्त रक्त विन्द की समस्त सैन संघरी ॥ १३२ ॥

चामर छन्द

सैनि सर्व संघरी सुरक्त विन्द देखिकै। कोपिकै प्रचण्ड वान लीन तीख सज्जिकै समर्थ रथ्य गाजि वाजि पिल्लिकै। मीचु ज्यौ डरैसि सिद्धि शीश कै प्रान मिल्लि कै ॥ १३३ ॥

मुच कुन्द छन्द

सीस प्रान मिल मिल्लि युद्ध कह क्रोध रूप दल पति कढं ।।
अति कराल विकराल लालतं कोप ज्वाल पर ज्वाल वढं ॥
धरि प्रचंड घन दंड सचंड मंड युद्ध रस क्रुध भयं ।।
भवति हूं ह शर जहं वाहरन लोक लोक भय कुह भयं ॥ १३४ ॥

दोहा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लोक लोक भय कूह लहि गहित वज्र वज रंग ॥
यह शक्तै कोनिय पसर पिल्लि गजेन्द्र अभंग ॥ १३५ ॥

मोती दाम छन्द

झुकी सब मैहि इन्द्राक्षि अकेलि। दल पति पै ऐरा वत हिपेलि ॥
फिरा वति वज्र महा वज रंग। हत्यौ झुकि दैयत युद्ध अभंग ॥ १३६ ॥
महा वल दैयत सुमेर तूल। लगे तिहि वज्र हि लघु हि फूल ॥
गज तन फूलत जै सर क्रुद्ध। लग्यो अति होन परस्पर युद्ध ॥ १३७ ॥
टूटै जुरि वाननि वान अखंड। झरै तिन ते अति ज्वाल प्रचंड ॥
विलोकि त्रि लोकि पुरी रिपु अत्र। उडै उड गन ज्यों अन्धि निमत्र ॥ १३८
भयो इमि युद्ध महा घन घोर। महा भैभौ भव मंडल सोर ॥
गर्जै वल दैयत संगर चाव। लगे नहिं तातन नेक न घाव ॥ १३९ ॥
सोरठा ॥ लगैन तातन घाय। इंद्र शक्ति हठि हठि चकित ॥
तव सव शक्ति नि आय घेर्यो रिपु चहुं ओरते ॥ १४० ॥

तोमर छन्द

सब औरते घिरि राव। कीन्हो जो सवनि भिराव ॥
ब्रह्मी हन्यो विधि दंड। वैस्नवी सुचक्र निखंड ॥ १४१
रुद्रिहि त्रिशूल नि छेदि। इंद्री सो वज्र नि मेलि ॥
काली खडग वहु कीन। कृस्ना शकति उर दीन ॥ १४२
वाराहि दंत विदारि। नर हरी पंजनि फारि ॥
शिव दूति फर सन मारि। किय छिद्र छिद्र विदारि ॥ १४३
दोहा ॥ इमि सव मिल घायल कियो रक्त विन्द मद मक्त ॥
जिमि वरषै घन घोर झरति मि तन वरषहि रक्त ॥ १४४

नराच छन्द

जो रक्त विन्द रक्त वुन्द भूमि माहिं सो पर्यौ ॥
तितेक रक्त विन्दु सो अनन्त दान वा खर्यौ ॥
समूह वार पार हू रकत्त विन्दु पूरियो ॥ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मरै दुनीद पेट ही च पेट सैल चारियो ॥ १४५ ॥

सोरठा॥ चुरी पच्चरन सपल्ल लोक लोक खल भल परिय॥
रहि यन भगन गयल्ल दिशि विदिशिन दैयत वढ़ै॥१४६

त्रिभंगी छन्द

वढ्ढै वहु दैयत अति मद मैयत रिसत पतै यत तरु मंडै ॥
पल पल पल गर्वित धरि धरि पर्वित झुकि झुकि सर्वत सर छंडै ॥
देखति इमि शत्रनि समर समर्थनि धरि धरि अत्रनि देव झुकी।
वाहन रिपु हंकरि सारंग टंकरि करि करि वंकरि दैत्य हुं को॥ १४७॥
करि करि अति क्रुद्धः विरचि विरुद्धः परमत सुद्धः युद्ध जुरी।
छंडित वहु त्राननि खंडति दाननि दुरद अभाननि हंति सुरी॥
तीक्षनि सर वर्षति वाक विकर खति हनि रिपु हर्षति रात मुखी।
सन मुखरन मंडति खंडनि खंडति व्याह विहंडति इदन रुखी॥१४८
गहि गहि गज गंजिनि रथ पथ भंजिनि वहु रन रंजिनि रन रंगी।
करि असुर सुमारनि धूम धुमारनि परति झमारनि वहु संगी॥
वहु श्रोन भभ क्वति सैल्ह धम क्वति खर्ग चम क्वति रक्त सनै ॥
रिपु लुथ्थ हि लुथ्थनि गुथ गुथ गुथ्थनि जिमि गज जुथ्थनि सिंह सनै १४९
हनि दानव जूहनि करि करि कूहनि करति फतू हनि वाहु वरं।
ढह ढह रिपु झुंडहि हति भुज डंडह उछरत रुंडह श्रोन सरं ॥
श्रोनादिक आगर अमर उजागर मिलि सन सागर ऐस वरं।
वूडे नव खंडहि झिलति ब्रह्मण्डहि महि मंडल दल कौनु करं ॥१५०॥

दोहा॥ इमि सब सैनि संघारि रन रक्त विन्द तन वद्धि ॥
पुनि ज्यौं अकेल्यौ रहि गयो धर धरकत महि मद्धि॥१५१
वारह जारक संहरे देविनि करि करि कूह ॥
रक्त विन्द के रक्त ते फिरि फिरि जुरत समूह॥ १५२॥

गहीरा छन्द

इमि मारति रन झारति जिमि मारति अति त्यों वढ्यो।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लल संमर रिपु डंमर डरि अंमर हाहा रढै ॥ ॥ ॥
अर सनहि करि ऐनहि नहि चै नहि दै दै सवै ॥ ॥
करि सोचनि हरि लोचनि अरि मोचनि देवी सवै ॥ १५३ ॥

सर्व देवी उवाच

पद्मावती छन्द

मात सुनो यह बात थकी हम सर्व सुरी । ज्यौंहति त्यौं अति वा-
ढि दसो दिशि सैन परी ॥ आरत देव पुकारत ही भय भीत सवै ।
श्री भय भंजनि मात हरो भय घोर अवै ॥ १५४ ॥

मरहट्ठा छन्द

सुनि विनय निरंजनि श्री भय भंजनि प्रवल सिंह पर चढ्ढी ॥
चढ्ढी हरि हुंकरि सारंग टंकरि करन युद्ध हूं चढ्ढी ॥ ॥
चढ्ढी लहि उदित्त मात प्रमुदित्त अनहद नौवत वज्जी ॥
वज्जी सुर दुंदुभि मुदित भ कुंभभि अग्र कालिका गज्जी ॥ १५५ ॥
दोहा ॥ गर्जि सकल शक्तिन सहित लहि रन युद्ध झुकारि ॥
कीन पसर परमेश्वरी वाहन सिंह हुंकारि ॥ १५६ ॥

महानराच छन्द

हुंकार सिंह राज को गरज्जि सिंह वाहिनी सुवाहिनी समेत भूत
प्रेत अस्त्र दै लियो । दयंत श्रोन भागिनी ति जोगिनी यनी न
ची सु युद्ध जानि रुध्र पानि खानि स्वप्परै लियो ॥ भनै अनन्य
चाव धन्य श्री जनन्य हूलि कै त्रि शूल कै दले इ छेद गुल्ल तुल्ल
कै लियो ॥ दियो हुंकार सिंह घोर वढ्ढि कै वकत्र लो रकत्त सोर क-
त्त विन्दु कालिका अचै लियो ॥ १५७ ॥

विजय छन्द

रक्त सो रक्त विन्दादि दै रक्षसा भक्षि लीन्यो सवै कालिका भोगिनी ।
शक्ति सैनानि मैं जक्त माता हंसै जै विराजै विजयते प्रभा दुर्गनी ॥
देखि श्री देवि को देव जै जै जपै मान दे तां गना जे हतां सोगिनी ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

श्रोन पीपी छकी रंग भूरा चती नाचती जोगमा पाढिगं जोगिनी॥१५८

दोहा॥ रक्त बिन्दु इमि युद्ध रन वज्जे अमर सिंघान ॥

सुनत शुम्भ अति कोपि करि दियो निशुंभ यपान॥१५९

इति श्री मार्कण्डेय पुराणे सावर्णि के मन्वन्तरे देवी माहात्म्ये रक्त बीज वध ८ अष्टमोऽध्यायः॥

दंडक छन्द

निकसे निशुम्भ शुम्भ हुकुम सम्हार राज अमर विमान सजि त्रान तन जरती। रथी अति रथी महा रथी समरथ संग संगर अभंग वज रंग रंग भरती॥ है दल औ पैदल गयन्द दल साज सब चलति सकल दल घोरि निसि करती। अक्षर अनन्य फरन फरक फरक सेस धर कि धर कि धीर धरती न धरती॥ १६०॥ धरकि धरकि धिर धरन धरनि धर करषि कमठ कमलि नि दल चच कति डगत नगर डगम गत जगत गिरि भगत नगन मय सूर सब वच कति॥ अक्षर अमर अक वक सक पक परिधक पक विधि सेसु वधु वनु वच कति। चलित जु प्रवल निशुम्भ सु पृथुल दल जल थल विकल सकल महि म चकति॥ १६१॥

दोहा॥ धावत प्रवल निशुंभ के वज्जत तवल निशान॥

महि मचकति लचकति अचल विचल अमर शशिभान॥

रेखता॥

निशान दै आव निशुम्भ चतुरंग दल लियो सब संग रन तज रंग गहिल्ली। हं करत संक देवं क डं कानि दै सुनि संकानि सक्रादि सुर देह ढिल्ली॥ सो रौरि गुण गौरि सिर मौर कछु कोप करि अरु ओप करि चक्र चलि ज्यौं चक्र चिल्ली॥ महा सत्र गज राज गन जानि गल गाल मृग राज सं माज सं फौज पिल्ली॥ १६३॥

दोहा॥ पिलीं सकल शक्तै इतहि उतहि प्रवल रिपु क्रुद्ध।

6589.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हंकि हंकि वंकट विकट अभै उभै जुर युद्ध ॥१६४

त्रिभंगी छंद

जुरि युद्ध नि जोधा जुद्ध प्रबोधा करि करि क्रो धारन ठाढ़े ।
हथ्थिनि सों हथ्थिनि रथ्थिनि रथ्थिनि समर समर्थ्थि निमन वाढ़े
है दल सों है दल पैदल पैदल इहि विधि द्वै दल कोप पुरे ॥ ॥
जापर जो अव छत कित कितना वध साव धान जुरि युद्ध जुरे ॥१६५

भुजङ्ग॰ प्रयात छन्द

जुरे जुद्ध जोधा दुहूं ओर जोरं । ह हंकारि हंकारि कै क्रुद्ध घोरं ॥
तजे अत्र पै अत्र ठा तत्र वोडे । तकै दांव पै दांव आवद्ध छोडे ॥१६६॥
जुटै त्रान सों त्रान ज्वाला झरै हैं । टुटै वान पै वान भूपै परै हैं ॥
चलै चक्र पै चक्र शक्रादि कंपै । झरै खड्ग सों खड्ग ज्वाला वितंपै ॥१६७॥
कहूं सेल्ह पै सेल्ह मे लै चमंकै । कहूं शूल पै शूल हूलै धमंकै ॥
कहूं वज्र सों वज्र वज्जैं करालं । कहूं गुर्ज सों गुर्ज वर्षन्त ज्वालं ॥१६८
कहूं अस्त्र पै अस्त्र श्री देवि छंडै । घने शस्त्र पै शस्त्र दै भार भंडै ॥
कहूं ब्रह्मनी ब्रह्म दंडै प्रहारै । महा घोर दानों अमानैन मारै ॥१६९॥
कहूं वैष्णवी चक्र सों सैन छंटै । हुवै जु द्ध भारी मचे वोहु टंटै ॥
कहूं रुद्रनी हूल शूलै धमंकै । महा घोर दानो हृदै में चमंकै ॥ १७०॥
कहूं इन्द्रनी वज्र सों शत्रु चूरै । कहूं वान वाना वली युद्ध पूरै ॥ ॥
कहूं कुर्म शक्ति हथ्थिनि विदारै । कहूं अंकु सं मारिकै मुंड फारै ॥१७१॥
कहूं वारहीं दन्त ही दैत्य दाहै । कहूं मारि ठं काठ कै सैन ढाहै ॥
कहूं नार सिंही महा पुंज भंजै । कहूं गर्जि ही गर्जि गज राज गंजै ॥१७२॥
कहूं चंडिका रथ्य सों रथ्य मारै । कहूं हथ्थिया हथ्थिया सों पछारै ॥
कहूं कालिका जुत्थ के जुत्थ भक्षै । कहूं सा सहै सैन आकाश गक्षै ॥१७३
कहूं अर्जि का भिंड हो भिंडि मारै । कहूं चर्न हीं चर्न कै चूर डारै ॥
कहूं वारुनी दारुनी वार वाहै । कहूं ज्वालिनी ज्वाल माला निदाहै ॥१७४
कहूं खेचरी भूचरी मारि दैनी । कहूं यक्षनी रक्षनी भक्षि लैनी ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कहूं जोगिनी भोगिनी श्रोन संन्यै। कहूं संखनी डंकनी फूल मन्यै॥१७५
कहूं प्रेत फूलै रुधिर नीर न्हाही। कहूं भूत भैरो लियें लुथ्थ जाही॥
कहूं लुत्थ पै लुत्थ दैयंत लुट्टै। कहूं रुंगना सूर मालुत्थ टुट्टै॥१७६॥
कहूं मुंड कट्टे डरे भूमि भारै। कहूं रुंड घूमै मनो मत्त वारै॥
कहूं मुंड विन रुंड लै खर्ग धावै। कहूं श्रोन लै पित्र पिंडा भरावै॥१७७॥
कहूं धाइ लै घोर चिंकार स्वंकै। कहूं धाय भादों नदी से भभ क्कै॥
कहूं मात मातंग अंभंग लुट्टै। कहूं त्रुंगिया पत्त से रथ्थ टुट्टै॥१७८॥
कहूं गिद्ध उड्डै भखै श्रोन मासं। कहूं सिद्धि वैठे सु देखें तमासं॥
भयो युद्ध यों भूत भव्यै अनन्यं। विजै ईश्वरी कासु भाखै अनन्यं॥१७९

पद कुल छन्द

जपहिं अनन्य संगर जननी के। दानौ झुंड रुंड विन ही के॥
कीन मात सुर मन मन ही के। दानौ भाग गये रन ही के॥१८०॥

महा नराच छन्द

कियत्ति रुंड मुंड झुंड दानवा विखंडिकै अखंड सत्र मारि वारि पारि सिद्ध सालिका॥ कपंति चन्द्र भानयन जात कौतिकीन के अकूत भूत प्रेत भू अभूत युद्ध जालिका॥ भनै अनन्य चाव धन्य संग सिंह घोर ता प्रजो रता सो अन्य धन्य धन्य विश्व पालिका॥ समस्त सत्र गंजि अस्त्र शस्त्र पोछिन क्क में अनेक लक्षि लुथ्थि भक्षि लीन व्यय कालिका॥१८१॥

पद्धरी छन्द

कालिको सकल भक्षै दइत्त। देखत निशुंभ अति रोस चित्त॥
अति गर्व गर्जि विक्राल घोर। दस सहस वाहु धरि सस्त्र जोर॥१८२
दश दिशिनि सस्त्र पूरे अखंड। खल भलिय विश्व भेते ब्रह्मंड॥
तव सब देविनि हंकै विमान। घाले निशुंभ कहं चंडिवान॥१८३॥
अति वान महा गिरि वज्र तूल। लागो निशुंभ उर कूद फूल॥
काट्यौ न कटै अति विकट अंग। टाट्यौ न टरै संगर अभंग॥१८४॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मार्‍यौ न मरै जनु अमर काय। जार्‍यौ न जरै वज्र कुंरग राय ॥
हठि ही हठि थकि शक्तै समस्त। परवत प्रमान ठाढ़ो प्रमस्त॥१८५
गल गर्जि सकल शक्तिनि मझाय। ईश्वरि सन मुख धायो रिसाय॥
कर खरग काढ़ि रिस वंढि रास। दीन्यौ सुखर्ग झुकि सिंह शीस॥१८६
तब सिंहासन अम्बास मथ्य। लिय वोढ़ि खर्ग वहु आपु हथ्य॥
अप खर्ग काढ़ि रिप दाव डाटि। झुक खर्ग असुर भंजा सो काटि॥१८७
पुनि असुर कोपि तिरशूल लीन। श्री मात तुरत तिर टूक कीन ॥
पुनि असुर सांगलीनी प्रचंड। श्री मात तुरत किय खंड खंड॥१८८॥
पुनि असुर वज्र घाल्यौ सुरंत। श्री मात तम कितो र्‍यौ तुरंत ॥
तव असुर रोस खिसियाइ गर्व। दश सहस वाहु सजि सस्त्र सर्व॥१८९
तव मात सस्त्र खंडे समस्त। दश सहस वाहु काटे समस्त ॥
तद्यपि समथ्य मानी न हारि। धायो सन्मुख मुख वक्र फारि॥१९०॥
तव झुकि ब्रह्मी सिर दंड दीन। विष्णी हनि चक्रनि खंड कीन॥
रुद्रं त्रिशूल तीक्षन विदारि। इंद्री वज्रनि वज रंग मारि॥१९१॥
काली खर्गनि किय खंड खंड। चंद्रिका शक्ति शक्तिनि विहंड॥
वाराहि हृदय दंतनि विदारि। नर हरी उदर पंजनि निफारि॥१९२॥
के हरी नखनि नख सिख विहंडि। शिव दूति पिये श्रोनित अखंडि॥
भैरवी चर्न धरि रन कठोरि। संखिनि डंकिनि भुज लीन तोरि॥१९३॥
जोगिनि प्रेतिनि मिलि ठौर ठौर। भक्ष्यौ राक्षसु करि कौर कौर॥
यह सुरन देख राक्षसु क हाला आनंद हो वरषो पुहुप डाल॥१९४
दोहा॥ कौर कौर जोगिनि करो प्रवल निशुम्भ नरेश॥
सुनत शुम्भ रिस पर जर्‍यौ अति दुख परम कलेश॥१९५॥

इति श्री मार्कण्डेय पुराणे सावर्णि के मन्वन्तरे देवी माहात्म्ये निशुम्भ वध ९ नवमोऽध्यायः॥

तोटक छन्द

सुन शुम्भ चलो तो कलेश किये। दल की वल कीन सह्या रहिये॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE .

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अति आतुर क्रुद्ध उछाह कर नव मन देविनि देवन को निदरै ॥ १९६ ॥
असिढाल लिये कढि क्रुद्ध बढ्यो । जनु कोपि प्रलै कह कालु चढ्यौ ॥
इमि राज कढे सब नग्र कढो । खसी अरु राकस पुञ्ज बढ्यौ ॥ १९७ ॥
चल कूह करत दानौ घन से । एक सूट सबै एक ही मन से ॥
सब हूं कत कूकति धावत हैं । कर परवत वृक्ष फिरावत हैं ॥ १९८ ॥
घन घोर महा असु गर्जति हैं । भुज ठोकि महा बल सर्जति हैं ॥
सब धावत धाय धराध चकै । नव खंड ब्रह्मण्ड सबै लचिकै ॥ १९९ ॥
गिरि मेरु हलै सब लोक कपै । विधि विष्णु सुरेश्वर त्राहि जपै ॥ ॥
दशहूं दिशि कम्पु भयो धरनी । नहिं दानव सैन परै बरनी ॥ २०० ॥
खुर धार निछार अकाश चढी । छपि भानु प्रभा रनु रैनु मढी ॥
पंच भूत कपंत अकूत भये । गजि जोरन आतुर आप गये ॥ २०१ ॥

कुंडलिया छंद

आतुर इमि आयो नृपति रन्न भूमि जुरि जूह ॥
जूह कुटम जूझो निरखि बाढो सोक समूह ॥
बाढो सोक समूह दुःख रुंदत्तु रिसावव ॥
सावव भ्रम ही भीत न्हती रिपु देखि खिसावव ।
देखि खिसावव शुंभ समर गर जतु गन मातुर ॥
मातु रसन सुख धाय पति न आयो अति आतुर ॥ २०२

सवैया

आतुर शुम्भ गयो रन में जहं ठाढि भवानि गुमान गरूरी
मूरति वंत निरंजनि जोति दिये दृग अंजन रेख सिंदूरी ॥
सर्व सिंगार विभूषित भूषन अत्र धरे कर संगर रूरी ॥
वैश्य किशोर महा सुकमार प्रताप बली सब भातिन पूरी ॥ २०३
दोहा ॥ परम प्रताप स्वरूप लहि रह्यो शुम्भ चक वाय ॥
अहंकार के कोप तें कहे वचन खिसियाय ॥ २०४ ॥

शुम्भ उवाच

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गीति का छन्द

तू कहति जो मम युद्ध जीति हिते हि वरहुं वर धारि।
इन सकल देविनि वल लरति तो मै कहा वल नारि॥
तव जानि हौं जव आपु वल संग्राम मो सह साजु।
पर वल स्वयम्बर कव कह्यो करु स्वयं संगर आजु॥२०५

दोधक छन्द

वात इती सुनिकै जग वंदिनि। दानहू ज्वा दु दियो सुर चंदिनि॥
हों अकेलि दु तिया जनि जानहि। सव मम अंस प्रमानै मानहि॥२०६॥

मुचकुन्द छन्द

यों कहि आदि शक्ति जननी सव शक्ति वदन समाइ लही।
ज्यौं लहरै उठि मिलै सिंधुतें तिहि तिहि भिन्न भई नगही॥
यों सव देवि समाय आप महं मात सु आपुहि आपु रही।
आपु प्रभाव जनाइ प्रभावति पति नृपत्ति सों वात कही॥२०७॥

ईश्वरी उवाच

दंडक छन्द

मैं हौं जोग माया मेरी माया को विलास विश्व माया ही तै मोहो मूढ़ जान तन टेक मैं। मोही तै पसारो सवु मोही मैं पसारो देखि मोही मैं समै हैं जलम करी विवेक मै॥ आदि शक्ति मोही मध्य मोही अन्त मोही शक्ति अक्षर अनन्य अन्य मिथ्या भ्रम भेक मै। कवल मैं एक एक जानत अनेकनि मैं एक ते अनेक एक शक्ति हौं अनेक मैं॥

दोहा॥ जदपि आपु समझाव हीं तदपि न समझो नीच॥
गर्जि अस्त्र छंडन लग्यो सो है मूढ की मीच॥२०९॥

छप्पै॥

गर्जि दुष्ट वल पुष्ट अस्त्र सस्त्रनि बहु छंडति।
जिमी घेरि गिरि मेरु मेरु मंडल झरि मंडति॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पुरिय वान असमान वान विन है रन सुझति ।
उलटि उलटि लै अस्त्र सत्र अपु ही अपु युझति ॥
कहि अहार भवति आकृत भव भवन भूत अद्भुत समर
सुरवर विरंचि वांछित कुशल सुत्राहि त्राहि नंपति अमर ॥ २१० ॥
दोहा ॥ त्राहि त्राहि त्रिभवन मच्यो भद्र महा रन कूह ॥
घोर युद्ध दारुन मच्यो सत्रुह जूही जूह ॥ २११ ॥

दंडक छन्द

देवि सत्रु जूह भव जूह कूह लोकनिमि हू हके कवूह को सल्ला-
रि रिपु गंजिनी । साधि धनु वान चन्द्र वान अरि प्रान लैन भृकु-
टी कमान सी चढाव श्री निरंजिनी ॥ अहार अनन्य कोपि अ-
मिते प्रचंड अंग अंग अज्वलित ज्वाल माल तिन कंजिनी । कै
कै सिंह नाद सिंह पे लति रिसानी रोस गर्जि घोर बानी श्री भवा-
नी भय भंजिनी ॥ २१२ ॥

अमर गीति का छन्द

भय भंजिनि गर्जी रन मैं। कीन पसर रिपु दल मैं ॥
कोप कृपा युत मन मैं। पेलि सिंह अति बल मैं ॥ २१३ ॥
दोहा ॥ कीन पसर अरि झुंड पर ज्यों पक्षिन में बाज ॥
ब्रह्मादिक कौतिक थकित श्री भगवति रन साज ॥ २१४ ॥

अद्भुत ध्वनि छन्द

श्री भगवति अति कोपि करि धनुष बान धरि हत्थ ॥ ॥
अबल सुंभ दल बल मलति चलत चपल गति रथ्थ ॥
रथ्थहि चलति रथ्थ हि धनु सुर कथ्थहि करन करथ्थहि ।
तहं पथ रथ्थहि वीर विरथ्थहि मथ्थहि इतति समथ्थहि ॥
असु वर मथ्थहि भरत भरथ्थहि अरधिति रथ्थहि गुभगती ॥
चरित अरथ्थहि अछर कहथ्थहि धनुष धरत श्री भगवती ॥ २१५ ॥

कमला छन्द

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

धनु हाथ सो क्रुद्ध धरे। समरत्थहि सर स्वर की।
उत अर्वन खर्वन रथ वल गर्वन सुसेस धराधर की॥
कहि अक्षर अत्र जिते इतते सो तिते तिया कर की।
हर स्वयं भु आचंभ करै यहि करतव अव करकी॥२१६

सवैया॥

कर्षति पासिनि पासि महा सुर झर खति स्वर्गनि सो रिस तुर्गा।
वर खति वान घने घन सत्रनि तर्खति ज्यों सकु निष्यति उर्गा॥
हर्षति जोति विजै कहि अक्षर अच्छर देवन चलहि जो सुर्गा।
ज्यों अति अद्भुत युद्ध करिय रिपु दारुन दुर्ग विदारन दुर्गा॥२१७॥

दोहा॥ श्री दुर्गा रिपु दुर्ग हति कत संगर भक रुराड॥
खंड खंड खंडे असुर जित तित हर कत मुंड॥२१८॥

महा नराच छन्द

डरे अखंड रुंड झुंड झुंड दीह दानवा प्रतुंड श्रोन कुंड बूड खंड खंड देहरी। जहां तहां निहारि भूरि पूरि श्रोन मास ही तमा सही चकित्त भूत प्रेत देत ही हरी॥ भनै अनन्य धन्नि धन्नि युद्ध श्री जनन्य के न अन्य भूत भव्य वत्य मान जानिये हरी। अकेलि केलि ही दले समस्त दैयता जथा अनंत दंति पंति हंति एक केहरी॥२१९॥ हरं भयान श्री भवानि भूरि भारि टारि कै सुमारि झारि सत्र अस्त्र सस्त्र हस्त मेलि मे। उठे कमंद्ध क्रुद्ध वुद्ध युद्ध कौत्र सुद्ध झो महासनद्ध वद्ध वद्ध वुद्धि नाप छेलि मे॥ भनै अनन्य जोर जंग मात संग मंडिनी प्रचंड दानवा अखंड खंड खर्ग खेलि मैं। समूह हूह कैद हैल हैन हेकि हैं कहूं रहे खहे वहे ति श्रोन सिंह की दलेलि मैं॥२२०॥ वहेति श्रोन सिंह की ज्यों सिंह की दपेट वाल पट्ट कै झपट्ट कै सो सर्व सत्र छाहिनी। ढल वय ढाल कध्य मध्य खर्ग ग्राह गेतु जा भुजा भुजंग अंगुलानि दादुलाव गाहिनी॥ भनै अनन्य अन्य अंग भंग जत्र

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जंत्र जानि मंत्र अत्र ज्वाल जाग पन्हरा रिन्हाहिनी । तहां महा समुद्र मै विमुद्र रूप राज सी जहां जसी विराज मान मात सिंह वाहिनी ॥ २२१ ॥

नाग स्वरूपी छन्द

प्रचंड सिंह वाहिनी । समस्त सत्र दाहिनी ॥
विलोक शुंभ क्रुद्ध कै । झुक्यौ विखाद वुद्ध कै । २२२ ॥
अनन्त अत्र मुक्किये । सुदिख्य मात झुक्किये ॥
समस्त अत्र खंडियो । अभूत युद्ध मंडियो ॥ २२३ ॥
कियेति क्रुद्ध चढ्ढियो । समान युद्ध वढ्ढियो ॥
परस्स सर्र छंडही । सुत्रान आंन खंडही ॥ २२४ ॥
जुटंत अस्त्र अस्त्र सों । टुटंत सस्त्र सस्त्र सो ॥
तकं तदा वदा वही । झुकंत युद्ध चाव ही ॥ २२५ ॥
करंतहं कहं तहै । धरंत धी निशं कहै ॥
लरंत अंत रिक्षनं । करंत चाम तीक्षनं ॥ २२६ ॥
चलंत शूल सल्हकं । दलंत दाव हूल कं ॥
चलंत जोर चत्र है । गजंत घोर वत्र है ॥ २२७ ॥
उठंत चक्र ज्वालकं । छुटंत तीर भालकं ॥
लगंत तीर पर्वतं । भगंत देव सर्वतं ॥ २२८ ॥
भिदंत व्योम वान है । छिदंत हेल वान है ॥
अनंत युद्ध वित्त है । इतै उतै न जित्त है ॥ २२९ ॥
विलोकि लोक कंपही । सुत्राहि त्राहि जंप ही ॥
त्रिदेव सोक मंड ही । उसास सास छंड ही ॥ २३० ॥

दंडक छन्द

त्राहि त्राहि जप तत्र देवता विलोक सोक लोक लोक भागि बडे गिरिनि गिरत हैं । श्रोन के समुद्र मैं समुद्र सातों झिलि रहै पर्वत से रिपु वाद झिर्ना से झिरत हैं ॥ डड से बहत रुंड

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मुंड झुंड जहां तहां देखत चकित भूत भोगत फिरत हैं । अक्षर अनन्य अंतरिक्ष लक्ष जो जन पै अंबा अरु शुंभ काल मीचु से लरत हैं ॥ ३३१ ॥

दोहा ॥ दश हजार जो जन चढो धरनी ऊपर ओन ॥
कह अनन्य संग्राम को वर्नन करिये कौन ॥ ३३२ ॥
वर्णि झुका संग्राम गति त्रि भुवन भवत अचल्ल ॥
देखत दमि अम्बा चरित चकित हरी हर ब्रह्म ॥ ३३३ ॥
फिर चक्रत सम उभय रथ अन्तरिक्ष रिस मण्ड ॥
करत बुद्ध हंकरत मुख झरत अत्र अति चण्ड ॥ ३३४
दुहि विधि विविधि प्रकारि करि समर परस्पर वाढ ॥
काल मीचु मानहु लरत उभय महा रिस वाढ ॥ ३३५

मरहट्टा छन्द

वाढे रिस युद्ध हि विवि वल वुद्ध हि कुद्ध सस्त्र चलंत ॥
धरनी असमानहि पूरि यत्रा नहि भानहि विरथ वलंत ॥
देवा अति आरति दीन पुकारति मारति क्यों नहिं मातु ॥
लीला रन खेलति दहिने देखति देखति खल कन खातु ॥ ३३६ ॥

छप्पै ॥

सुनि सुनि अमर पुकार समर कोपित भै भंजिनि ।
टंकरि करि सारंग रंग रन भुव रन गंजिनि ॥
अर्ध चन्द्र पर वान वान अरि प्रान हरनि धरि ।
तान कान पर जन्त कुटिल भृकुटी मरोरि करि ॥
कहि अछर अनन्य सदृष्टि मिलि तजि सासे करि सरभरेव
नृप शुंभ प्रचंड अखंड तन सुखंड खंड खंडन करेव ॥ ३३७ ॥

छप्पै ॥

जयति सिंह अस वार जयति संगर भुज पंकर ।
जयति ब्रह्म धनु धार जयति सुरलभ भुव संकर ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जयति महा प्रभुतार जयति मधु कर भैरवंडन।
जयति चंड औ मुंड जयति धुम्राक्ष विहंडन।
जै जयति रक्त औ विन्दु जो शुंभ निशुंभ समरे भनन।
सुरसंकट हरन अनन्य भनि जयति जपत समरथ जनन॥२३८॥

विजै अपरी छंद

जयति जयति प्रमुदित सकल सुर जननि पई कृत विनय उमगि वर॥ सहि प्रम भरि गिरि नयन पुरि। करत चारु अस्तुति अजुली जुरि॥ २३९॥

इति श्री मार्कण्डेय पुराणे सावर्णि के मन्वन्तरे देवी माहात्म्य शुम्भ वध १० दशमो ऽध्यायः॥

अथ नारायणी देवी की स्तुति लिख्यते

दोहा॥ नमो नमो श्री भगवती अद्भुत चरित अनूप॥
सुर उवारि गंजे असुर धरि वहु दिव्य स्वरूप॥२४०

विजया छन्द

दिव्य मानिक्य को क्रीट माथे लसै दिव्य आभर्ण आ भांति भारायनी। दिव्य स्वेतां वरं सुंदरं गजितं छाजितं दिव्य ही रानि हारायनी॥
दिव्य आवाई श्री दिव्य सिंहासनी शुंभ निशुंभ संहार कारायनी।
दिव्य औतार संसार भै तारनी सो नमो हो नमो मात नारायनी॥२४१
संख चक्रं सारंग त्रैशूल सैल्ह प्रदक्षिनी दीक्ष सो प्रान धारायनी।
चापपासां कुसंढाल घंटा तथा वा महा थे महा सोभ कारायनी॥
पुंजि दश सहस भय भूरि भुज भंजनी रंजनी देवता दैत्य दारायनी।
अम्बिका रूप श्री संभु शक्ती स्वयं सो नमो हो नमो मात नारायनी॥२४२
गात राते प्रभा पाट राते धरे सर्व राते नगा भर्न धारायनी॥ ॥
दण्ड का मंण्डलं मण्डितं पानि में चारि वक्रं श्रुतिं चारि चारायनी॥
राजसी राज हंसे सपै आसन वासनी दास की आसपारायनी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ब्राह्मनी रूप ब्रह्मादि कर्त्ता स्वयं सो नमो हो नमो मात नारायनी॥२
शङ्ख चक्र गदा पद्म सारङ्गिनी सावला निर्मला भेष धारायनी॥
चारि बांहे धरे वैजयंती गरे वस्त्र पीतां वरं दास तारायनी ॥
शक्ति शक्ती स श्री गरुड़ सिंहासनी मुर मधु कैट भै दुष्ट दारायनी॥
वैष्णवी रूप विश्वादि माता स्वयं सो नमो हो नमो मात नारायनी॥२४४
शीस सुंदर जटा गङ्ग धारा लसै चन्द्रमा भाल त्रै नेत्र तारायनी ॥
सिंह चर्मै धरे मुंड माला गरे तेज पुंजे प्रभा सर्व हारायनी ॥
शूल डमरू लिये काल कूटे पियेगा तवी भूत नंदीह कारायनी।
रुद्रिनी रूप रुद्रादि जोगेश्वरी सो नमो हो नमो मात नारायनी॥२४५
सर्व सोने मनै भूषनी भूषिता वस्त्र नोने सुने नेह जारायनी ।
पानि वज्रै धरे मुक्त माला गरे माधुरी मूर्त्ति सो भास धारायनी ॥
मात मातंग ऐरा पती वाहिनी दाहिनी देवता दैत्य दारायनी ।
इन्द्रनी रूप इन्द्रादि राजेश्वरी सो नमो हो नमो मात नारायनी॥२४६॥
मोर क्रीटे दिये मोर पीठा सनी मोर ग्रीवां तनै सोभ कारायिनी ।
चक्र शक्ती धरे वर्न माला गरे वस्त्र पीरे परे पीर टारायनी ॥
सिद्ध सार्ध्या र्चिता चर्चिता चंदनी वंदनी विश्व विश्वेश पारायनी।
नंददा रूप आनंददा सर्वदा सो नमो हो नमो मात नारायनी॥२४७॥
चंद्र वक्रं तथा अर्द्ध चंद्रं सिरं चंद्र वर्नंत नंदीप्ति धारायनी ।
अंवरं उज्वलं प्रज्वलं दुष्ट वा आवद्य सावद्य नेह भारायनी ॥
शक्ति को दंड मंड करि दानवा दंड ब्रह्मांड पारायनी । ।
कालिका रूप को मारि शक्ति प्रभा सो नमो हो नमो मात नारायनी॥२४८
शीस आकाश लों चरन पाताल उन घोर वक्री महा घोर धारायनी
रोम पै ने खरे नैन ज्वाला भरे भीम भैसा सनी शीश कारायनी॥
शेष के शीश से थम्भ उक्षारि कै डाढ के अग्र पर भूमि धारायनी
वारही रूप वाराह वर दायका सो नमो हो नमो मात नारायनी॥२४९॥
अर्द्ध नर्देह धरि के हरी अर्द्ध ह्वै उर्द्ध के शीस दा क्रुद्ध कारायनी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वंक पंजा वने नैन हूं चट चटे कट कटे दंत मय मंत गारायनी ॥
खंभ उर दारि करि दानवां हिर्न कश्यप को पेट फारायनी ।
नार सिंही नृसिंह स्वरूप करि सो नमो हो नमो मात नारायनी॥२५०
कंठि सुम्मै स्वरी वैठि उट्ठे महा हास अट्टं टहं कार कारायनी ।
मुंड रुंडा वली तुंड श्रोने श्रवै श्रोन वूडे गज चर्म धारायनी॥
सुष्य माखं महां भैरवी भ्यानुकं भूत चढ़ भयंकर भेष कारायनी।
कालिका रूप ह्वै राक्षसं भक्षिनी सो नमो हो नमो मात नारायनी॥२५१
देवता श्रोनता पंक अंक र्चिता चर्चिता गात संघात धारायनी ।
ढल कानि चक्रानि सत्र प्रहारनी अत्र स्वर्गादि दुर्गादि दारायनी॥
गर्वतै गर्वती चर्वती दान वा प्रवती प्राय क्राय प्रेय कारायनी।
चंडिका रूप वंकार हंकारिनी सो नमो हो नमो मात नारायनी॥२५२॥
धूमरे सेजटा जूट छूटे सिरं कर्न मुद्रे तने भस्म धारायनी ।।
तेज भौंहैं चढ़ी लाल चच्छे प्रभा माल रुद्राक्ष भद्राक्ष धारायनी॥
कट्टि श्रोणं वंर पट्ट हैं गेरु षेख पर पानि श्रोन प्रेय हारायनी ।
दूतिका रूप संग्राम रग प्रिये सो नमो हो नमो मात नारायनी॥२५३॥
वक्र विक्राल प्रज्वाल ज्वाला न नंदै नंनं सैन संदुष्ट जारायनी।
नाशिका स्वास छोड़े हि फौजे उड़ै मत्त हाथी न हाथान झारायनी॥
फेरि त्रैशूल त्रैशूल छै कारनी धारनी जै विजै विश्व पारायनी ।
भई कालिका कला काल भै भंजनी सो नमो हो नमो मात नारायनी॥२५४
एकंत आपु सक्तैं अनेक कै के शुंभ निशुंभ संहार कारायनी ।।
फेरि के नेक ते एक ही ह्वै खरी एक ह्वै नेक की वुद्धि पारायनी ॥
तो कथा जो जथा सो तथा को कहै यों अनं नै भनै श्रोत भारायनी।
अक्षरों अनन्य अद्वैत सक्ती प्रभो सो नमो हो नमो मात नारायनी॥२५५
आपु हीं आप अद्वैत प्रभावती आपु हीं आप दुतीय कारायनी ।
आपु हीं सुनी निर्गुनी निर्भी सिनी भासिनी आपु हीं ज्योति जारायनी।
आपु हीं आदि आनादि सर्वादि है सर्व कारं न सर्व प्रेय कारायनी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जक्त वीजंति श्री जक्त माता स्वयं सो नमो हो नमो मात नारायनी॥२५६
हस्त हीनं विधि कोटि कर्त्ता सदा चक्षु हीनं हरिं कोटि पारायनी॥
अत्र हीनं हरे कोटि संघारि करि चर्न हीनं सोइ कोटि चारायनी॥
वाक हीनं धनं कोटि वानी धुनी गात हीनं धरं कोटि धारायनी।
रूप हीनं तनं कोटि रूपं करी सो नमो हो नमो मात नारायनी॥२५७॥
रूप रेखै नहीं रूप रेमै मही रूप रेखे सुकी धीव धारायनी।
दृष्टि आवै नहीं दृष्टि आवै तुही दृष्टि आदृष्टि त्रैलोक पारायनी॥
नित्यं निर्वर्त्तिपखर्ति कारायनी निर्गुनी सर्गुणी भेष धारायनी।
अक्षरों अनन्य अद्वैत शक्ति प्रभु सो नमो हो नमो मात नारायनी॥२५
सर्व रूपी निमे रूप रंगा तुही सर्व ज्ञानी नमो ज्ञान धारायनी।
सर्व जोती नमो जोति आभा तुही सर्व शक्ती नमो शक्ति कारायनी॥
सर्व संसार में सार भूतिक तुही अक्षरों अनन्य सो सर्व कारायनी।
सर्व व्यापी चितं नित्त ही सर्वदा सो नमो हो नमो मात नारायनी॥२५९
सर्व दास्त चितं नित्त हीं सर्वदा सर्वदा नदयं देव दारायनी॥
सर्व सिद्धीन मैं अश्चर्य्यदा सर्वदा सर्वदा सर्व उद्योतकारायनी।
सर्वदा सो प्रकासं प्रभावंदि तां वेद वेदांत सिद्धांत सारायनी।
सर्व कर्त्तार श्री सर्व शक्ती स्वयं सो नमो हो नमो मात नारायनी॥२६०
सर्व सो पानि पादानि प्रभा सर्व तो चक्षु कर्त्तादि कारायनी।
सर्व तो गर्भ संसार गर्भै धरै सर्व तो दृष्टि सो पृष्टि धारायनी॥
सर्व तो नंत आद्यंत मध्यं विना पूरना सर्व तो पार पारायनी।
सर्व विश्वेश्वरी विश्व रूपै धरे सो नमो हो नमो मात नारायनी॥२६१
इति श्री मार्कण्डेय पुराणे सावर्णि के मन्वन्तरे देवी माहात्म्ये नारायणी देवी स्तोत्र समाप्तः ११ ग्यारवां अध्यायः॥

दोहा॥ विश्व रूप विश्वेश्वरी विश्व जननि परवान॥
सकल विश्व कारन करन तेरी शक्ति निदान॥२६२

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रखता

तेरी ये शक्ति उत्पत्ति संसार सब तेरी ये शक्ति प्रति पालि गाता।
तेरी ये शक्ति विस्थार अस्थित हुनी तेरी ये शक्ति संघार धाता ॥
तेरी ये शक्ति फल दंड पावैं सबै तेरी ये शक्ति क्रतु कर्म्म धाता ॥
तेरी ये शक्ति शिव शक्ति ज्ञानन्य भनि जयति शिव शक्ति श्री जक्ति माता ॥२६१
तेरी ये शक्ति भुव धर चर अचर सब तेरी ये शक्ति जलसिंध माता ॥
तेरी ये शक्ति जग तेज व्यापी कहैं तेरी ये शक्ति जग वहति वाता ॥
तेरी ये शक्ति आकाश ध्वनि शब्द है तेरी ये शक्ति सब तत्व धाता ॥
तेरी ये शक्ति शिव शक्ति ज्ञानन्य भन जयति शिव शक्ति श्री जक्ति माता ॥२६२
तेरी ये शक्ति निर्गुन्न निर्वान पद तेरी ये शक्ति सर्गुन्न गाता ॥ ॥
तेरी ये शक्ति विधि विस्न ऐश्वर्य्य पद तेरी ये शक्ति महेश्वर धाता ॥
तेरी ये शक्ति रवि चन्द्र उद्योत कर तेरी ये शक्ति जल मेघ पाता ॥
तेरी ये शक्ति शिव शक्ति ज्ञानन्य भनि जयति शिव शक्ति श्री जक्ति माता ॥२६३
तेरी ये शक्ति स्वर अमर अमरावती तेरी ये शक्ति मुनि ज्ञान ज्ञाता ॥
तेरी ये शक्ति दयंत वर जोर अति तेरी ये शक्ति गन रङ्ग राता ॥ ॥
तेरी ये शक्ति सब सिद्धि सिद्धांत पद तेरी ये शक्ति अष्टसिद्धि दाता ॥
तेरी ये शक्ति शिव शक्ति ज्ञानन्य भनि जयति शिव शक्ति श्री जक्ति माता ॥२६४
तेरी ये शक्ति तेजीनि में तेज है तेरी ये शक्ति दल बलनि गाता ॥
तेरी ये शक्ति ज्ञानीन में ज्ञानु है तेरी ये शक्ति ध्यानीन ध्याता ॥
तेरी ये शक्ति योगीन में योग है तेरी ये शक्ति तप तेज जाता ॥
तेरी ये शक्ति शिव शक्ति ज्ञानन्य भनि जयति शिव शक्ति श्री जक्ति माता ॥२६५
तेरी ये शक्ति चेतन्य संसार सब तेरी ये शक्ति जड़ सून गाता ॥ ॥
तेरी ये शक्ति मद्दि तेज बंधन भवै तेरी ये शक्ति मम मोद्दि ज्ञाता ॥
तेरी ये शक्ति भूत प्रेत भै पाव ही तेरी ये शक्ति निज भक्ति जाता ॥
तेरी ये शक्ति शिव शक्ति ज्ञानन्य भनि जयति शिव शक्ति श्री जक्ति माता ॥२६६

छप्पै ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जक्त मात जग जोति जक्ति मूरति जग बधनि ॥
शिव निवास शिव शक्ति शिवहि शिवदा शिव चंदनि
निर्विकार निरधार नित्वनिर्वान निरंजनि ॥ ॥
भव अधार भव सार प्रभै करता भै भंजनि ॥ ॥
सवानि सर्व लायक सकल सर्व लोक कारन करन ॥
समरथ जननि अनन्य भनि सो जयति मात असरन सरन ॥
दोहा ॥ इमि देवन अस्तुत करी पूरन प्रेम प्रमान ॥ ॥
ह्वै प्रसन्न भनि ईश्वरी मागहु सुर बरदान ॥ २७० ॥

गीतका छंद

सुनि सुर फूलि प्रनाम करि कीन्ह अर्ज कर जोरि ॥
तुव कृपाते हम देव पद लहि सुख विभुक्ति न थोरि ॥
ताते सो यह वर दान मांगत सुनि जननि जग माय ।
जब जब सु इमि संकट परै तब तब सो होहु सहाय ॥ २७१ ॥
सोरठा ॥ सुनि सुर विनये पीर श्री भवानि भय भंजनी ॥
मधुर वचन गंभीर कहा आप परमेश्वरी ॥ २७२

पद्धरी छन्द

संकट काटौ तुह्मरे समस्त ॥ जब जब बाढै दैयत प्रमस्त ॥
अट्ठाइस्सै कलि युग सुठौर ॥ ह्वै है नृप शुंभनि शुंभ और ॥ २७३
तब हीं कत्यानी रूप धारि ॥ हनि हौं सो दुष्ट सौथिनि संघारि ॥
पुनि भौमा सुर ह्वै है प्रचंड ॥ युगजीति राज राजहि ब्रह्मंड ॥ २७४
तब ह्वै सताक्षि औतार धारि ॥ हनि हौं सो दुष्ट खर्गनि प्रहारि ॥
पुनि भीम नाम ह्वै है दयंत ॥ सो सकल लोक फिरि है दवंत ॥ २७५ ॥
तव ह्वै भीमा औतार धारि ॥ हनि हौं सो दुष्ट वृक्षनि उछारि ॥
पुनि दुर्ग नाम दयंत होय ॥ त्रिलोक विजय जय सफल सोय ॥ २७६ ॥
तव ह्वै दुर्गा औतार धारि ॥ हनि हौं सो दुष्ट पर्वत पहारि ॥ ॥
पुनि रास नाम दैयंत राज ॥ विस्तादि विश्व जीतै समाज ॥ २७७ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तव रक्त दंति का रूप धारि ॥ हनि हौं सु दुष्ट नख दंति फारि ॥
पुनि दारु नाम ह्वै है सुघोर ॥ त्रिलोक छीन लेहै प्रजोर ॥ २७८ ॥
तब ह्वै सु भ्रामरी रूप धारि ॥ हनि हौं सु दुष्ट हिर्दय विदारि ॥
पुनि परहि काल कृषि आपु जोर ॥ उपजहि न अन्न अति त्रास घोर ॥ २७९
तव ह्वै साकंभरी रूप आइ ॥ रचि साक सब हि लेहौं जिवाइ ॥
अरु साक नाम हनि हौं दयंत ॥ ताते साकंभरी नाम निभनंत ॥ २८० ॥
इमि जब जब संकट परहि जक्त ॥ तव तव रक्ष हुं हौं अभय भक्त ॥
नहिं इस मैं कुछ संदेह लाव ॥ यह सुनत भया सब सुक्ख चाव ॥ २८१ ॥

मुरिल्ल ॥

यों कहि दै जग अभय जननि जग वंदिनि ॥
ह्वै गत अंतर ध्यान परम सुख कंदिनि ॥
फूलि गये सुर पूरि नि वैन सुख राजियो ॥
परि हां घर घर मंगल चारु वधाये वाजियो ॥ २८३ ॥

दोहा ॥ इहि विधि सुरथ समाधि सुनि श्री भवानि गुन गाथ ॥
मुक्ति भक्ति फल दंड जग हैं सब जिन के हाथ ॥ २८३
श्री भवानि की भक्त ते भुक्ति भक्ति उद्योत ॥
भगवति भक्ति विहून नर उभय दृष्टि ते होत ॥ २८४
ताते भगवत भक्तिनि जु करहु राज मनु लाय ॥
मन वांछित फल पाय हौ सब लायक जग माय ॥ २८५

इति श्री मार्कण्डेय पुराणे सावर्णि के मन्वन्तरे देवी माहात्म्ये देवी वाक्यं समाप्तम् १२ बारवां अध्यायः ॥

सोरठा ॥ इहि सुनि सुरथ समाधि फूल पाइ गहि विनै किय ॥
किमि जग जननि अराधि माना मंत्र कहिये गुरू ॥ २८६

ऋषि उवाच

मोती दाम छंद

सनौ नृप उत्तम मंत्र सुजाम ॥ फलै जिहि ते मन सा सब काम ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

श्री भवानी भवानि को नाउ उचारु॥ सो आगम वेद पुराण को सारु॥ २८७
श्री भवानी के नाम ते औरन मंत्र॥ श्री भवानी के नाम ते औरन जंत्र॥
श्री भवानी के नाम ते औरन ध्यान॥ श्री भवानी के नाम ते औरन ज्ञान॥ २८८
श्री भवानी के नाम ते और न देव॥ श्री भवानी के नाम ते और न भेव॥
श्री भवानी के नाम ते और न जापु॥ श्री भवानी के नाम ते और न छापु॥ २८९
श्री भवानी को नाम सजीवन मूरि॥ हरैं भै रोग करैं दुःख दूरि ॥
श्री भवानी को नाम फलै फल चारि॥ सो भक्ति चिंतामनि इष्ट विचारि॥ २९०
श्री भवानी को नाम है पूरन जापु॥ भजैं विधि विष्णु सदाशिव आपु ॥
इहै हृदय धरि नृप राय॥ श्री भवानी भवानी रहौ लौ लाय॥ २९१॥
श्री भवानी जपै सब ह्वै है काज॥ श्री भवानी भवानी जपो तुम राज॥
श्री भवानी जपे दुख ह्वै हैं दूरि॥ श्री भवानी को जानो राज पर पूरि॥ २९२

दोहा॥ इहि सिख सुनि सुख पाइ पर उगरे सुरथ समाधि॥
नदी तीर अस्थित भये श्री भवानि व्रत साधि॥ २९३॥

छप्पै॥

नदी तीर विवि वीर थापि मृग्न सै श्री मूरति ॥
पूजि रुचिर फल फूल चित्त धरि सुंदर सूरति॥
इक टक दृष्टि लगाइ इष्ट चरन न चित चर चत॥
श्री भवानि येत वानि जपति निति प्रति हित सर सत।
नख भूषन प्यासन त्रास भै सिंह वाघ गुंजत निकट
इमि तीन वर्ष व्रत देखि कै सुह्वै प्रसन्न अंवा प्रगट॥ २९४

दोहा॥ प्रगट कही परमेश्वरी माग नृपति वर दान ॥ ॥
सुनि पाइ परो नृप प्रेम सों किय विनती परिवान॥ २९५

राज उवाच

दोधक छन्द

देहु अभै वर मो भय भंजनि॥ मोरन जीति करौ रन गंजिनि ॥
मारि सवै सत्रनि कहि जीतहु॥ राज लहौं परिवारहि भेटहुं॥ २९

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ईश्वरी उवाच

राज लहौ नृप सत्रनि जीतौ ॥ जाय मिलौ अपने कुल हीतौ ॥
अन्त मन्वन्तरको पटु पावौ॥ सूर्य वंस सावरन कहावौ ॥ २९७ ॥

मोटक छन्द

इतनी सुनि भूपति पाय परो ॥ मन ते अधिकै वर काज सरो ॥
पुनि बानिय सो जग मात कही॥ वर मांग समाधि सो देहुं सही॥ २९८॥

छप्पै

सुनि समाधि किय विनय सुंनहुं जननी जग वंदिनि
जग असार भ्रम सकल कहा मागहु सुर चंदिनि ॥
देहु मोहि विज्ञान मोह माया भ्रम छुट्टहि ॥ ॥
जन्म मरन दुख मिटै कर्म वंधन भै दुट्टहि ॥
निज प्रेम भक्ति आनंद मैं रहौं सदा तुह्मरे सरन ॥
उर ओर भ्रम्म उपजै नहीं सुसेंऊ दिन दिन त्वै चरन॥ २९९

ईश्वरी उवाच

सोरठा॥ तोहि तोहि विज्ञान मोह भ्रम माया कटै ॥
वसै हृदय मम ध्यान जीवन मुक्ति समाधि तुव॥ ३००

दोधक छन्द

यों कहिकै जनसों यह वानी ॥ अंतर ध्यान भई मह रानी ॥
सिद्धि भयो सु समाधि प्रवीना॥ ज्ञान वढ्यौ मन ध्यान हि लीना॥ ३०१॥
राउ गयो अपने घर काजा ॥ सत्रुनि जीति भये मह राजा ॥
देश प्रसिद्धि करी यह वानी॥ पूजि सवै जग आदि भवानी॥ ३०२ ॥
दोहा॥ इहि विधि सुरथ समाधि कहँ वर दीन्ह्यौ जग माइ ॥
राई ते परवत करौ रह्यो जक्त जसु छाइ ॥ ३०३ ॥
जक्त जीव जल थल सकल एकहि से सब थापि ॥
श्री भवानि की भक्ति ते भयो सो वढ्यो प्रतापि॥ ३०४॥

दंडक छन्द

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ब्रह्म विष्णु रुद्र इन्द्र चन्द्रादिक देव देह कीट हू पतंग मंग अंग इति थापु है ॥ सब के शरीर एक मार्ग समान जानि सब ही मैं आतमा समान पुनि आपु है ॥ देखिये प्रतिक्ष भिन्न करनी अनन्य भनै ऐकै सिर मोर येक कीट पदु चापु है ॥ जैसी जहां भक्ति तैसी तहां शक्ति विधि वान ये है श्री भवानी जूकी भक्ति को प्रतापु है ॥ ३०५॥

दोहा॥ सुर नर मुनि गंधर्व गन जाचक सबै वरवानि ॥
तिहूं लोक तिहुं काल में दाता एक भवानि ॥३०६॥

मदन मनोहर छन्द

दई शक्ति ब्रह्मै भये विश्व कर्त्ता दई शक्ति विष्णै प्रजा पालि जानी॥
दई शक्ति से सै भये भूमि धर्ता दई शक्ति रुद्रै प्रलै घात धानी ॥
दई शक्ति चंद्रै छपा जोति छाई दई शक्ति भानै प्रकाशै भवानी ॥
अनन्यै भनै देवता शक्ति जाचै तिहूं लोक मैं एक दाता भवानी॥ ३०७॥
भजै सिद्धि साधू मनिन्द्रा अराधै लहै ऋद्धि सिद्धै फरै सिद्धि वानी॥
भजै राज राजै फुरै सस्त्र विद्या जुरे युद्ध जीतै विजै राज धानी ॥
भजै भक्ति योगी लहै मुक्ति अंतै कवित्वै करैजे चहै वाक वानी ॥
अनन्यै भनै सर्वदा सर्वपूरी सबै विश्व में एक दाता भवानी॥ ३०८॥
भजै सारदा ते लहै बुद्धि विद्या गणेशै भजै ते लहै सिद्धि वानी ॥
भजै विष्णु को तो लहै मुक्ति अंतै विभौ लक्षिमी के भजै जक्त जानी॥
जिते देवता भेवता को विचारै कला जौन जामैं सुहै तासु दानी ॥
अनन्यै भनै एक को एक दाता सदा सर्वदा सर्वदाता भवानी॥३०९॥
सदा सर्व दाता सदा सर्व कर्ता सदा सर्व रूपक कहै वेद वानी ॥
न आदै न अंता कहावै अनंता नियंता सबै लोक की लोक रानी ॥
हरी शंभु ब्रह्मा करैं भक्ति जाकी धरैं ध्यान योगी तपी सिद्धि ज्ञानी॥
अनन्यै भनै जो रहै गुप्त रूपा कहै जोति जासो वहै है भवानी॥ ३१०॥

दोहा॥ गुप्त वहै प्रगटै वहै निकट वहै औ दूरि ॥ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

श्री भवानि त्रि भुवन विषै रहीसवनि भरि पूरि॥३११
जो जिहि भांति भजे जहां ताको तहां प्रतक्षि॥
त्रिभुवन व्यापक शक्ति निजु श्री भवानि शुभ लक्षि॥३१२
श्री भवानि शुभ लक्षनी परम सुन्दरी जानि॥
ताको सुंदर चरित यह अक्षर अनन्य बखानि॥३१३॥
जो यह सुंदरी चरित को पढ़े सुनै मन लाय॥
मन वांछित फल देहि तिहि श्री भवानि जगमाय॥३१४

इति श्री मार्कण्डेय पुराणे सावर्णि के मन्वन्तरे देवी माहात्म्ये सुरथ वैश्य वर प्रदानं १३ तेरहवां अध्यायः॥ इति श्री सुन्दरी चरित्र सम्पूर्णम्॥ + +

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
सत्य नारायण की कथा दी-	प्रबोधचन्द्रोदय नाटक	ज्ञान सरोदय
का सहित	भजना वली	निघण्टु भाषा
आर्द्ध-धर भाषा टीका सहित	गीत गोविन्द नागरी	सुख सागर
सिद्धान्त चन्द्रिका	कृष्ण बाल लीला	ब्रज विलास
सुहृन्न गण पति	कृष्ण सागर	सिंहासन बत्तीसी
शनिश्चर की कथा	कायस्थ दर्पण	शुक बहत्तरी
अमर कोष प्रथम काण्ड	हारीत स्मृत नागरी	छन्दोर्णव पिङ्गल
अमर कोष तीनों काण्ड	भगवत गीता सटीक नागरी	बाला बोध
भाषा टीका सहित	कमीशन बरोदा	हिदायत नामा मालगुज़ारी
अनेकार्थ प्रकाश	जगत विनोद नागरी	हिदायत नामा बन्दोबस्त
तुलसी शब्दार्थ प्रकाश	रामायण राम विलास	ताजीरात हिन्द अर्थात् ऐक
राम कलेवा	कल्प सूत्र भाषा नागरी	४५ सन् ई०
आनन्दामृत वर्षिणी	यमुना लहरी	ऐक्ट २५ सन् १८६१ जारिते
गङ्गा लहरी	सहस्र रजनी चरित्र	फौजदारी
दोहा वली रत्ना वली	षट् पंचाशिका	मज मूआ ऐक्ट सगान अब-
चित्र चन्द्रिका	विनय पत्रिका नागरी सटीक	ध जिस के साथ नीचे लि-
कविकुल कल्पतरु भाषा	रामायण बड़ी	खे हुये ऐक्ट संयुक्त हैं॥
स्त्री दर्पण	तथा हिनाई	ऐक्ट १७ सन् १८६२ ई०
सङ्ग्रह शिरो मणि	वृन्द सभा नागरी	ऐक्ट १४ सन् १८६५ ई०
शिवार्चन	जातक चन्द्रिका नागरी	ऐक्ट १६ सन् १८६५ ई०
समर बहार विन्द्राबन	याज्ञवल्क्य भाषा टीका स-	ऐक्ट नम्बर २६ सन् १८६६
औषधि सङ्ग्रह कल्प वली	हित	ई०
श्री दुर्गा जी मूल	भगवद्गीता विष्णु सहस्र	ऐक्ट नम्बर १८ सन् १८६०
गुल बका वली	नाम सहित	ई०
प्रेम रत्न	लघु जातक भाषा टीका सहि-	ऐक्ट २० सन् १८६६ ई०
बन यात्रा	त	ऐक्ट २५ सन् १८७० ई०
बारह मासा बन देव प्रसाद कृत	कल्प सूत्र	ऐक्ट १० सन् १८५९ ई०
कथा चित्र गुप्त	भाषा जातक लङ्कार	ऐक्ट ५ सन् १८६१ ई०

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
ऐक्ट १० सन् १८६१ ई०	सूरज पुर की कहानी	अक्षरा वली
ऐक्ट १८ सन् १८६८ ई०	विद्या चक्र	पशु चिकित्सा
ऐक्ट २६ सन् १८६७ ई०	भूगोल तत्व	कविता रत्नाकर
क़वायद रेलवे और उस के	पदार्थ विद्या सार	बिहारी सतसई सटीक
साथ क़ानून भी हैं ॥	वर्ण प्रकाशिका	अपूर्व कथा
ऐक्ट १८ सन् १८७१ ई०	पत्र दीपिका	वैलवी सन्ध्या
अर्थात् क़ानून लगान मु-	भारत खण्ड का	विश्राम सागर
मालिक मग़रबी व शिमाली	क्षेत्र प्रकाश	भूगोल दर्पण
ऐक्ट ११ सन् १८७४ ई०	पत्र हितैषिणी	देवी भाग वत नागरी
ऐक्ट १० सन् १८७१ ई०	रामयण सातो काण्ड	विद्यार्थी की प्रथम पुस्तक
	बाल काण्ड	महा भारत भाषा छन्द ग्र-
सरिश्तह तालीम की पुस्तकें	अयोध्या काण्ड	न्थ में जो श्री मन्महा-
अक्षर दीपिका	आरण्य काण्ड	जाधि राज उदित नरायण
विद्याङ्कुर	किष्किन्धा काण्ड	सिंह जी काशी नरेश ने
बाल बोध	सुन्दर काण्ड	गोकुल नाथादि कवी श्व-
भाषा चन्द्रोदय	लङ्का काण्ड	रों से रचना करय कल-
इंग्लिस्तान का इतिहास	उत्तर काण्ड	कत्ते में रूप भाषा का वही
गणित लता २ भाग	अक्षरा रम्भ	श्री युत माधव सिंह गंढ
तथा ३ भाग	भाषा तत्व दीपिका	अमेठी नरेश की सहा-
गणित प्रकाश १ भाग	बाला भूषण	यता और अनुराग से इ-
तथा २	हिदायत नामा मुदर्रिसा-	स यन्त्रालय में अत्युत-
तथा ३	न हल्क़ह बन्दी	म टेप के पुष्ट अक्षरों में
तथा ४	शिक्षा वली	२७ पर्व्व बड़ी शुद्धता
क्षेत्र चन्द्रिका २ भाग	भोज प्रबन्ध सार	से छपा है ॥
रेखा गणित १ भाग	राज नीति	सिद्धान्त चन्द्रिका
तथा २	स्त्रियों की हितो पत्रिका	
बीज गणित १ भाग	धात्त्वर्णव	
तथा २ भाग	अवध का भूगोल	

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by MoE-IKS

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust